# घोषतरंग

## आनक

स्वयंसेवक का नाम.....

शाखा.....केंद्र.....

जिला .....प्रांत.....

**प्रकाशक :**

साहित्य संगम
74, रंगराव मार्ग, शंकरपुरम्
बेंगळूरु - 560 004
✆: 080-26610081

प्रकाशन क्रमांक : 43

# लोकार्पण

युगाब्द 5116, 31 मार्च सन् 2014 ई.

प्रथम संस्करण - 1983
द्वितीय संस्करण - 1991
तृतीय संस्करण - 1999
चतुर्थ संस्करण - 2004
पंचम् संस्करण - 2010
षष्ठम् संस्करण - 2014

मूल्यः- ₹ 55

केवल व्यक्तिगत उपयोग के लिये

**मुद्रकः**
राष्ट्रोत्थान मुद्रणालय
गविपुरं मार्ग, केंपेगौडानगर
बेंगळूरु - 560 019.
✆: 080-2661 2730

# प्रस्तावना

''सङ्गच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।''

यह एक निर्विवाद सत्य है कि कदम से कदम मिलाकर-चलने और स्वर से स्वर मिलाकर बोलने से सबके मन मिलते हैं और इसी का द्योतक है उपर्युक्त वेदमन्त्र। इसलिए समग्र हिंदू समाज को संगठित करने के लिए बद्धपरिकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यक्रमों में सांघिक व्यायाम, सांघिक संचलन और संघिक गायन को विशेष महत्व प्राप्त हो यह अत्यन्त स्वाभाविक है।

सांघिक व्यायाम एवं सांघिक संचलन के साथ तालबद्ध सुस्वर घोष भी हो तो सोने में सुहागे की बात हो जाती है और कार्यक्रमों में चार चाँद लग जाते हैं। किंतु इस दृष्टि से उपयोग में आ सकनेवाली किसी प्राङ्गणीय वादन की परम्परा प्राचीन काल में हमारे यहाँ थी या नहीं और थी तो उसका स्वरूप क्या था इस संबंध में अधिक कुछ ज्ञात नहीं हो पाया है। ऐसी स्थिति में घोष की पाश्चात्य पद्धति का अङ्गीकार करना क्रमप्राप्त था। किन्तु उसके भारतीयकरण की दिशा में हमारे अनेक बंधु सक्रिय हुए जिसके परिणामस्वरूप भारतीय रागों एवं तालों पर आधारित अनेक नवीन रचनाओं का निर्माण एवं प्रयोग अब तक हुआ है। उन्हीं रचनाओं का संकलन 'घोष-तरंग' नामक प्रस्तुत पुस्तिका में हुआ है।

संगीत को लिपिबद्ध करने की कुछ शैलियाँ भारत में प्रचलित हैं। इनमें भातखंडे की स्वरलिपि का प्रचलन सर्वाधिक है। घोष रचनाओं के लेखन हेतु कतिपय आवश्यक संशोधनों सहित उसी स्वरलिपि का प्रयोग इस पुस्तिका में हुआ है। स्वरलिपि सम्बन्धी विस्तृत जानकारी 'घोष परिचय' नामक पुस्तिका में दी गई है। रचनाओं की शुद्धता की ओर विशेष ध्यान दिया गया है। प्रस्तुत संकलन के उपयोग द्वारा सर्वत्र समरूपता स्थापित हो सकी तो इस पुस्तिका का प्रकाशन सार्थक माना जा सकेगा।

**कुप्प. सी. सुदर्शन**

v v v

# मनोगत

'घोष तरंग' का छठा संस्करण आपके हाथों में सौंपते हुए हमें अतीव आनंद की अनुभूति हो रही है।

पुस्तक के प्रस्तुतिकरण में देश के अनेक बंधुओं ने अपार परिश्रम, सहयोग एवं मार्गदर्शन किया है एतदर्थ हम उनके आभारी हैं। राष्ट्रोत्थान मुद्रणालय, बेंगळूरु ने पुस्तक का सुंदर मुद्रण किया है इसलिए हम उनके भी आभारी हैं। आशा है कि विविध वाद्यों की रचनाओं का यह प्रस्तुतिकरण, शिक्षार्थियों के लिए उपादेय सिद्ध होगा। इसे और भी अधिक उपयुक्त बनाने हेतु आपके सुझावों का सदैव स्वागत है।

**प्रकाशक**

बेंगळूरु
षष्ठम् संस्करण
युगाब्द ५११६
३१ मार्च, सन् २०१४ ई.

## प्रचलनगति - शंख आनक रचना


| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. श्रीराम | 1 | 10.दशमेश | 7 | 19.रणजीत | 16 | 27.भरत | 24 |
| 2. उदय | 1 | 11.दीप | 8 | 20.जगन्नाथ | 17 | 28.भास्कर | 25 |
| 3. सोनभद्र | 2 | 12.तरंग | 9 | 21.साकेत | 18 | 29.नीलकंठ | 26 |
| 4. किरण | 3 | 13.मंगला | 10 | 22.यादव | 19 | 30.निनाद | 27 |
| 5. गायत्री | 3 | 14.विनायक | 11 | 23.सुधीर | 20 | 31.त्रिहुत | 28 |
| 6. मरुधर | 4 | 15.श्रीनिवास | 12 | 24.बजरंग | 21 | 32.वसंत | 29 |
| 7. मेवाड़ | 4 | 16.परमार्थ | 13 | 25.सागर | 22 | 33.प्रताप | 30 |
| 8. चेतक | 5 | 17.प्रतिध्वनि | 14 | 26.वीरश्री | 23 | 34.पाञ्चजन्य | 31 |
| 9. अजेय | 6 | 18.विक्रम | 15 | | | | |


## प्रचलनगति - वंशी आनक रचना


| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. भूप | 33 | 11.सुरभि | 41 | 22.खमाज | 52 | 33.धानी | 64 |
| 2. केदार | 33 | 12.हंसध्वनि | 42 | 23.कैरलि | 53 | 34.गुणवंत | 65 |
| 3. मीरा | 34 | 13.हंसवाहिनी | 43 | 24.बदरी | 54 | 35.गणेश | 66 |
| 4. तिलककामोद | 35 | 14.हररंजनी | 44 | 25.बंगश्री | 55 | 36.गोवर्द्धन | 67 |
| 5. तिलंग | 36 | 15.शरावती | 45 | 26.केकावली | 56 | 37.पारिजातम् | 68 |
| 6 पहाड़ी | 36 | 16.देशकार | 46 | 27.जननी | 57 | 38.विष्णुपदी | 70 |
| 7. शिवरंजनी | 37 | 17.श्रीपाद | 47 | 28.हरिकांबोजी | 58 | 39.कालगति | 72 |
| 8. दुर्गा | 38 | 18.कल्याणी | 48 | 29.गौडमल्हार | 59 | 40.वंदेमातरम् | 73 |
| 9. वलचि | 39 | 19.प्रसाद | 49 | 30.रामरंजनी | 60 | 42.माधवनित्या | 74 |
| 10.भारतम् | 40 | 20.शंकरा | 50 | 31.मधुकर | 61 | 43 भीमपलास | 76 |
| | | 21.राजश्री | 51 | 32.विजया | 62 | | |

## मंदगति - शंख आनक रचना


1. कावेरी 77
2. वरदा 77
3. निरंजन 78
4. दत्तात्रेय 79
5. मलयप्रभा 79


## मंदगति - वंशी आनक रचना


1. कर्नाटकी 80
2. वेलावलि 81
3. शिवराजः 82
4. कलिंगड़ा 83
5. प्रशांति 84
6. शारदा 85
7. देवदत्त 86
8. इंद्रप्रस्थ 87
9. तुंगा 88
10. मारवा 89
11. तोड़ी 90
12. बागेश्री 91
13. कल्याण 92
14. केतकी 93
15. केशवश्री 94
16. कलावती 96
17. आसावरी 97
18. आरुणी 98
19. समर्पण 99
20. केशवः 100


## नैमित्तिकानि


1. ध्वजारोपणम् 101
2. ध्वजप्रणाम 101
3. स्वागतप्रणाम 102
4. प्रत्युत्प्रचलनम् 102
5. आद्यसरसंघचालकप्रणाम 103
6. सरसंघचालकप्रणाम 103

# स्वर लेखन

घोष रचनाओं का लेखन करने के लिए प्रयुक्त स्वरलिपि, उससे, संबंधित शब्दों की परिभाषा तथा अन्य संबंद्ध विषयों का संक्षिप्त परिचय यहाँ दिया गया है। 'घोष परिचय' पुस्तक से अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

**स्वर:** वाद्यों के वादन से निर्मित कंपित वायुमंडल के ध्वनितरंगों से नाद सुनाई देता है। ऐसे संगीतोपयोगी नादस्थानों को 'स्वर' कहते हैं।

**वंशी :** वंशी में **स री ग म प ध नि** इस क्रम से सात स्वर बजाए जाते हैं। प्रत्येक स्वर का एक नाम तथा निश्चित कंपन संख्या होती है। री ग ध नि यह चार स्वर अपनी निश्चित क्षमता से कम कंपन के तथा म अधिक कंपन का भी हो सकता है। इन पाँचों को 'विकृत स्वर' कहते हैं। इनके स्वराक्षरों के नीचे छोटी अधोरेखा रहती हैं। ये स्वराक्षर निम्न प्रकार से लिखते हैं।

**स री॒ री ग॒ ग म म॒ प ध॒ ध नि॒ नि**

**स्वर-सप्तक:** सात स्वरों के स्वरसमूह को 'स्वर-सप्तक' कहते हैं। सहजता से फूँक लगाने पर 'मध्य सप्तक' मिलता है। इसके नीचे से मिलने वाले सात स्वरों को 'मंद्र सप्तक' एवं ऊपरी स्तर के सात स्वरों को 'तार सप्तक' कहते हैं। ये तीनों स्वरसप्तक निम्नानुसार लिखते हैं।

**मंद्र** - **स़ री़ ग़ म़ प़ ध़ नि़** **मध्य** - **स री ग म प ध नि** **तार** - **सं रीं गं मं पं धं निं**

तीनों सप्तकों में विकृत-स्वरों के सभी संभाव्य प्रकार नीचे दिए है।

**मंद्र** - **री़॒ ग़॒ म़॒ ध़॒ नि़॒** **मध्य** - **री॒ ग॒ म॒ ध॒ नि॒** **तार** - **रीं॒ गं॒ मं॒ धं॒ निं॒**

**राग** - स्वरों के विशिष्ट संयोगों से रागों का निर्माण होता है। संयोग अनेक प्रकार के हो सकते हैं, किंतु जिन स्वर-संयोगों में रंजकता होती है, वे ही 'राग' कहलाते हैं। स्वरों में आरोह-अवरोह, वादी-संवादी, वर्ज्यावर्ज्य आदि भेद हैं। इनका ध्यान रखकर स्वरों का जो विन्यास किया जाता है, उसी से 'राग' का आविष्कार होता है।

**शंख** - सामान्यतः शंख वादन में कुल पाँच स्वरों का प्रयोग होता है। वे निम्नानुसार हैं।

**सृ पृ स ग प**

इसके आगे **नि̲** तथा **सं** स्वर भी आते है, जिनका उपयोग कभी - कभी किया जाता है।

**आनक तथा तालवाद्य** - पणव, आनक, खर्जानक, त्रिभुज, झल्लरी जैसे तालवाद्यों के वादन का स्वरलेखन निम्न प्रकार से किया जाता है। उन्हें ध्वन्याक्षर कहते हैं।

| **वाद्य** | **ध्वनि** | **ध्वन्याक्षर** |
|---|---|---|
| पणव | ध्वंकार | **ध्वं** |
| खर्जानक | धंकार | **धं** |
| आनक | तंकार | **त** |
| त्रिभुज | टंकार | **टं** |
| झल्लरी | झंकार | **झं** |

शारिकाओं द्वारा आनक पर आघात करने से 'तंकार' उत्पन्न होता है। आनक के वादन विन्यास को व्यक्त करने के लिए 'त' के अतिरिक्त और भी ध्वन्याक्षरों का उपयोग किया जाता है, जिनका विवरण निम्नानुसार है।

| **अपेक्षित वादन** | **ध्वन्याक्षर** |
|---|---|
| * दोनों शारिकाओं से एक साथ तंकार | **थ** |
| * दोनों शारिकाओं से एक साथ अनुतंकार | **थ्र** |
| * प्रमुख तंकार के किंचित् पहले दूसरे शारिका से - | |
| १. एक तंकार | **त्त** |
| २. अनुतंकार | **त्र** |

* केरवा रणन:   दा बा दा बा   त$^{त}$त$^{त}$त$^{त}$त$^{त}$   =   त्र

* खेमटा रणन:   दा   त$^{तत}$   =   त्र

* शारिकाएँ परस्पर टकराने से आनेवाली 'टिक्' ध्वनि : **+**

**रणन -** तंकार को यदि नियंत्रित नहीं किया, तो शारिका आवरण पर दो-चार बार उछलती है। क्रमश:क्षीण होते जाने वाले इस नाद को 'अनुतंकार' कहते हैं। इनका योग्य नियन्त्रण कर, (१) केवल तंकार, (२) एक तंकार एवं एक अनुतंकार अथवा (३) एक तंकार एवं दो अनुतंकार प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार के तंकारनुवर्ति अनुतंकार के साथ, तांत के प्रत्याघाती कंपनों को मिलाकर 'रणन' बनता है। केरवा रणन में चार तंकारानुवर्ति अनुतंकार तथा खेमटा रणन में एक तंकार के बाद दो अनुतंकारों का वादन अपेक्षित है। खेमटा ताल में रणन संघ का वैशिष्ट्य है।

**मात्रा -** स्वर लेखन में जिस प्रकार कौनसा स्वर बजेगा, यह स्पष्ट लिखते है, उसी तरह वह स्वर का कितने समय तक वादन होगा यह भी निर्देशित करना आवश्यक है। इस कालमापन के इकाई को 'मात्रा' कहते हैं। इसका कोई अलग चिन्ह नहीं है।

जब कोई स्वराक्षर या ध्वन्याक्षर अकेला लिखा जाता है, तब उसका अर्थ है कि वह स्वर या ध्वनि एक मात्रा की है। जैसे - **स री ग त टं झं त्र** आदि।

**मात्रांश -** जब एक 'मात्रा' में एक से अधिक स्वर या ध्वनि आते हैं तब उन स्वरों या ध्वनियों के लिए अपेक्षित कालमान को 'मात्रांश' कहते हैं। एक मात्रा में आने वाले इन स्वराक्षरों या ध्वन्याक्षरों के नीचे एक कोष्ठक लगाया जाता है।

**स**   -   १ मात्रा में १ स्वर (एक स्वर $^{१}/_{२}$ सेकंड का होगा)

**स री**   -   १ मात्रा में २ स्वर (प्रत्येक स्वर $^{१}/_{४}$ सेकंड का होगा )

सगप - १ मात्रा में ३ स्वर (प्रत्येक स्वर $^{१}/_{६}$ सेकंड होगा)

ततत त - १ मात्रा में ४ स्वर (प्रत्येक स्वर $^{१}/_{८}$ सेकंड का होगा)

रचना-शीर्षक के दाहिनी ओर ताल के पश्चात् दिया हुआ अंक (जैसे - ३६०, २४०, १८०, १२०, १००आदि) एक मिनट में उस रचना की कितनी मात्राएं बजेगी यह दर्शाता है। उदाहरणार्थ, 'खेमटा ३६०', ऐसा लिखा है, तो संचलन की गति एक मिनट में १२० रहेगी, किंतु मात्राएं ३६० बजेगी।

**अवग्रह** - किसी भी स्वर को एक या अधिक मात्रा या मात्रांश के लिए दीर्घ करना हो, तो उस स्वर-विस्तार को '**ऽ**' इस अवग्रह चिन्ह से दर्शाया जाता है; तथा उसका उच्चारण '**अ**' होता है। उदाहरणार्थ, यदि एक मात्रा का कालांश $^{१}/_{२}$ सेकंड हो, तो-

**स रीग ऽ** ..... एक मात्रा **ग** विस्तार ($^{१}/_{२}$ सेकंड)

**पऽऽऽ** ..... तीन मात्रा **प** विस्तार ($१^{१}/_{२}$ सेकंड)

**सऽसस** ..... प्रथम '**स**' का १ मात्रांश विस्तार ($^{१}/_{८}$ सेकंड)

**सऽऽग** ..... प्रथम '**स**' का २ मात्रांश विस्तार ($^{१}/_{४}$ सेकंड)

**यति** - किसी भी स्वर का (एक या आधिक मात्रा या मात्रांश के लिए) विराम करना हो, तो '**–**' इस यति चिन्ह से किया जाता है। उसका उच्चारण '**य**' होता है।

**उदाहरणार्थ**, यदि एक मात्रा का कालांश $^{१}/_{२}$ सेकंड हो तो -

**पमध** - : '**ध**' के बाद १ मात्रा यति ($^{१}/_{२}$ सेकंड)

तत–त : दूसरे '**त**' के बाद १ मात्रांश यति ($^{१}/_{८}$ सेकंड)

स– : **'स'** के बाद १ मात्रांश यति ($^{१}/_{४}$ सेकंड)

–प : प्रथम १ मात्रांश यति ($^{१}/_{४}$ सेकंड) बाद में **'प'** ($^{१}/_{४}$ सेकंड)

अभ्यास की दृष्टि से प्रारंभ में यति के स्थान पर **'य'** कह सकते है। बाद में **'य'** का उच्चारण छोड कर, मन में उतने यति की गिनती करते हुए कहिए या बजाइए।

अवग्रह तथा यति साथ साथ आने पर लेखन निम्नानुसार होगा।

**री म ऽ - :** १ मात्रा **म** विस्तार के बाद १ मात्रा यति ($^{१}/_{२}$ सेकंड)

सऽ–ग **:** १ मात्रांश **स** विस्तार के बाद १ मात्रांश यति ($^{१}/_{८}$ सेकंड)

अवग्रह तथा यति को स्वर जैसा ही माना जाता है। इसलिए इनके चिन्ह भी स्वराक्षर या ध्वन्याक्षर के स्तर पर ही अंकित किए जाते हैं।

**ताल :** मात्राओं की विशिष्ट, नियमबद्ध एवं रंजक योजना को 'ताल' कहते हैं। मात्राओं के इस विन्यास में जब ह्रस्व-दीर्घता, आवर्तनात्मक गति, अवसान अथवा वस्तुमान, समांतरता, यति तथा कुछ बोल होते हैं, तब इसको 'ताल' की संज्ञा प्राप्त होती है।

लेखन करते समय प्रयुक्त गट, गण, चरण आदि के चिन्ह तथा वर्णन निम्नानुसार है।

**गट :** ताल के अनुसार एक या अधिक मात्राओं से बने विशिष्ट समूह को 'गट' कहते हैं। गट-चिन्ह ',' ऐसा होता है।

**गण :** दो या अधिक गटों के समूह को 'गण' कहते हैं। यह चिन्ह '|' ऐसा होता है, जिसे 'गणदंड' कहते हैं।

**चरण :** दो या अधिक गण एकत्र आने पर अथवा गणों के ताल-आवर्तन से 'चरण' बनता है। इस चिन्ह '‖' को 'चरणदंड' कहते है, जिसे चरण के प्रारंभ तथा अंत में अंकित करते हैं।

**पुनश्चरण :** किसी एक चरण का पुनर्वादन अपेक्षित होने पर, उस चरण के अंत में 'पुनश्चरण' का ''ः||''यह चिन्ह लगाया जाता है।

**केरवा ताल :** इसमें ४ मात्राएं तथा उसके १ गण में २ मात्राएं होती है। केरवा-१२० लय के अनुसार १ मिनट में $^{१}/_{२}$ सेकंड की १२० मात्राओं का वादन होता है। यह ताल १०० तथा १६० लय का भी होता है, जिनका प्रयोग कुछ उद्घोषों में किया गया है।

**खेमटा ताल :** उसमें १२ मात्राएं, तथा इसके १ गण में ६ मात्राएं होती है। इस ताल में संचलन करते समय $^{१}/_{६}$ सेकंड की ३६० मात्राओं का वादन होता है।

**दादरा ताल :** यह ताल ६ मात्राओं का तथा इसके एक गण में ३ मात्राएं होती है। लय १२० का हो, तो हरेक मात्रा $^{१}/_{२}$ सेकंड की होती है। यह ताल १८० लय का भी होता है।

**झपताल :** झपताल १० मात्राओं का तथा प्रत्येक गण में ५ मात्राएं होती है। इसके एक मिनट में $^{१}/_{४}$ सेकंड की २४० मात्राओं का अथवा $^{१}/_{२}$ सेकंड की १२० मात्राओं का वादन होता है।

**रूपक ताल :** इसमें सात मात्राएं होती है। इसके १ मिनिट में $^{१}/_{२}$ सेकंड की १२० मात्राओं का वादन होता है।

**लय :** एक मिनट में बजाए जाने वाली मात्राओं की संख्या उस रचना का 'लय' होती है।

**सांतर :** शंख, वंशी आदि वाद्यों में मुखाग्र पर 'जिह्वाघात' (Tonguing) करते हुए प्रत्येक स्वर का अलग से बजाना ही 'सांतर' वादन कहलाता है। स्वरांतर का अन्य चिन्ह न लिखा हो, तो वादन 'सांतर' है ऐसा समझना चाहिए।

**निरंतर :** इन वाद्यों में 'जिह्वाघात' का प्रयोग न करते हुए एक ही फूंक में स्वर बदलने से 'निरंतर' वादन होता है। अर्धचंद्राकृति आकार का ' ⌒ ' यह चिन्ह संबंधित स्वरों के ऊपर लगाकर निरंतर वादन सूचित किया जाता है।

अपना घोष प्रांगणीय कार्यक्रमों के लिए प्रयुक्त होने के कारण हमारा वादन सांतर-प्रधान है। तथापि रंजकता की दृष्टि से कहीं कहीं निरंतर वादन भी किया जाता है।

**आघात:** किसी विशिष्ट स्वर का वादन उसके सहज स्तर से भी अधिक जोर लगाकर करना अपेक्षित है, तो उस स्वर के ऊपर ‘ ^ ’ यह ‘आघात-चिन्ह’ अंकित करते हैं।

आघात के अन्य प्रकार, जिनका प्रयोग संचलन की रचनाओं में नहीं होता है, बल्कि उद्घोष में होता हैं, निम्नानुसार है।

| | |
|---|---|
| < प | इस स्वर की ध्वनि प्रारंभ में कम तथा धीरे धीरे अंत में बढानी चाहिये। |
| > ग | इस स्वर की ध्वनि आरंभ में अधिकतम तथा अंत में धीरे धीरे न्यूनतम होगी। |
| <> म | इस स्वर की ध्वनि क्रमशः प्रारंभ में न्यूनतम, मध्य में अधिकतम तथा अंत में पुनः न्यूनतम आएगी। |

प्रभावी परिणाम केलिए इन चिन्हों से अंकित आघातयुक्त वादन का प्रयोग किया जाता है।

**लयभंग** - किसी विशिष्ट (विशेषतः अंतिम) स्वर का वादन, उसके समान्य कालमान से अधिक कालमान के लिए अपेक्षित हो, तो उसे ‘लयभंग’ के ‘ ⟶ ’ इस चिन्ह से सूचित करते हैं।

**दीर्घयति** - यदि ‘यति’ एक गण से भी अधिक हो, तो उसे ‘दीर्घयति’ के ‘।⟵२⟶।’ इस चिन्ह से दर्शाया जाता है। इस का अर्थ है, दो गणों की यति या विराम। ‘**२**’ के स्थान पर अन्य अंक लिखकर उतने गणों की यति सूचित करते हैं।

**क्रमभेद** - जब पुनश्चरण में अंतिम गणों का वादन भिन्न प्रकार से अपेक्षित होता है तब इन गणों को आवृत्त करने वाला कोष्ठक ऊपर से लगाकर उसे ‘**१**’ क्रमांक देते है तथा इसी प्रकार के कोष्ठक में अपेक्षित भिन्न वादन के गण लिखकर उसे ‘२’ क्रमांक देते है। इसे ‘क्रमभेद’ कहा जाता है। |¹ :|| ² | ||

इसका अर्थ यह होता है कि चरण दूसरी बार बजाते समय क्र. **१** कोष्ठक से आवृत्त गणों के बजाय क्र. **२** कोष्टक से आवृत गणों का वादन करना।

**कण-स्वर** - मुख्य स्वर का वादन करते उसके पहले या बाद में किसी अन्य स्वर का अत्यल्प, स्पर्श-मात्र वादन अपेक्षित

हो, तो इन अत्यल्प कालमान के स्वरों को कण-स्वर कहते हैं। स्वराक्षर या ध्वन्याक्षर को आधा लिखकर कण-स्वर दर्शाते हैं। उदा. **स्, र्, ग्, म्, ध्, न्, क्त** में **क्, त्त** में **त्** आदि.

**ध्रुव पद :** रचना के जिस पंक्ति को प्रत्येक चरण के बाद बजाया जाता है उसे 'ध्रुवपद' कहते हैं तथा उसके अंत में इसका संक्षिप्त रूप '।।ध्रु।।' अंकित करते हैं।

**प्रस्ताव पद :** रचना का वृत्त तथा शैली सूचित करने वाले चरण को 'प्रस्ताव पद' कहते हैं। यह रचना के प्रारंभ में आता है।

**सेतु पद :** रचना के वृत्त तथा शैली बदल सूचित करते समय, दो चरणों के बीच आनेवाले चरण को 'सेतु पद' कहते हैं।

**रचना लेखन :** प्रांगणीय तथा सांघिक वादन के लिए उपयुक्त ऐसी जो स्वरावली बनायी जाती है, उसे 'रचना' कहते हैं। इसमें अनेक चरण हो सकते हैं। अच्छी रचना का प्रत्येक चरण अपने आप में एक सांगीतिक वाक्य (Musical Sentence) अथवा रचना का स्वयंपूर्ण भाग जैसा रहता है।

लेखन के आरंभ में शीर्षक लिखते है। इस के प्रथम (याने बाएं कोने के) भाग में 'वाद्य का नाम' मध्य में 'रचना का नाम' (कोष्टक में उसका विशेष नाम या राग का नाम) तथा दाहिने कोने में 'ताल व लय' का उल्लेख करते हैं।

वंशी रचना-शीर्षक के नीचे संबंधित रागों का आरोहण - अवरोहण दिया गया है। रचना अभ्यास करने से पहले इन आरोहण - अवरोहण का पर्याप्त अभ्यास करने से रचना अभ्यास करने में सुविधा होगी।

रचना-लेखन के प्रारंभ में नाद-ब्रह्म का आद्याक्षर ।। ॐ ।। ऐसा लिखना चाहिए। सामान्यतः एक पंक्ति में चार गण लिखते हैं।

# सूचनायें

१) ध्वजारोपणम्, नैमित्तिकानि संबंधित सभी प्रणाम तथा उद्घोषों का वादन केवल संघ के कार्यक्रमों में ही करना चाहिए। अन्य संस्थाओं द्वारा इनका वादन करना वर्जित है।

२) 'प्रबोधन' के अलावा अन्य सभी उद्घोषों के पूर्व संघोष बजाना अनिवार्य है।

३) प्रबोधन, जागरण, दीपनिर्वाण सूचना, दीपनिर्वाण के उद्घोष निर्धारित समय पर ही बजाना चाहिए। अन्य उद्घोष न्यूनतम १० मिनट पूर्व बजाना चाहिए।

४) किसी भी कार्यक्रम के पूर्व उद्घोष केवल एक बार ही बजाना चाहिए। उद्घोष नेकर पहनकर ही बजाना अपक्षित है।

५) केवल बौद्धिक या शारीरिक परिक्षायें अथवा विशेष प्रसंगों में 'कार्यक्रम प्रारंभ' का उद्घोष कर सकते हैं। अन्य कार्यक्रमों का आरंभ सीटी बजाकर करना चाहिए।

६) बौद्धिक वर्ग के अंत में कोई भी उद्घोष नहीं बजाना चाहिए।

७) वाद्य समता व विस्तृत लिपि परिचय 'घोष परिचय' पुस्तिका में है।

८) प्राथमिक पाठ व शिक्षण पद्धति 'घोष शिक्षण विधि' पुस्तिका में है।

* * *

# आनक प्रयोग पाठ

दा - दाहिना हाथ  बा - बायां हाथ

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | दा | | | | दा | | | बा | | | बा | | | |
| 1 | ‖ | त | – | | त | – | | त | – | | त | – | ‖ | | |
| | | दा | दा | | दा | दा | | बा | बा | | बा | | | | |
| 2 | ‖ | त | त | | त | त | | त | त | | त | – | ‖ | | |
| | | दा | दा | | दा | | | बा | बा | | बा | बा | | | |
| 3 | ‖ | त | त | | त | – | | त | त | | त | त | ‖ | | |
| | | दा | दा | | दा | | | बा बा | बा बा | | बा | | | | |
| 4 | ‖ | त | त | | त | – | | त त | त त | | त | – | ‖ | | |
| | | दा दा | दा दा | | दा | | | बा | बा | | बा | | | | |
| 5 | ‖ | त त | त त | | त | – | | त | त | | त | – | ‖ | | |
| | | दा दा | दा दा | | दा दा | दा | | बा बा | बा बा | | बा बा | | | | |
| 6 | ‖ | त त | त त | | त त | त | | त त | त त | | त त | त | ‖ | | |
| | | दा | दा | | दा | दा | | बा बा | बा बा | | बा बा | बा | | | |
| 7 | ‖ | त | त | | त | त | | त त | त त | | त त | त | ‖ | | |
| | | दा दा | दा दा | | दा दा | दा | | बा | बा | | बा | बा | | | |
| 8 | ‖ | त त | त त | | त त | त | | त | त | | त | त | ‖ | | |
| | | दा दा | दा | | दा दा | दा | | बा | बा | | बा | | | | |
| 9 | ‖ | त त | त | | त त | त | | त | त | | त | – | ‖ | | |
| | | दा | दा | | दा | | | बा बा | बा | | बा बा | बा | | | |
| 10 | ‖ | त | त | | त | – | | त त | त | | त त | त | ‖ | | |
| | | दा | दा | | दा दा | दा | | बा | बा | | बा बा | बा | | | |
| 11 | ‖ | त | त | | त त | त | | त | त | | त त | त | ‖ | | |
| | | दा दा | दा | | दा | दा | | बा बा | बा | | बा | बा | | | |
| 12 | ‖ | त त | त | | त | त | | त त | त | | त | त | ‖ | | |

# आनक प्राथमिक पाठ - केरवा ताल

दा - दाहिना हाथ ‍ ‍ ‍ ‍ बा-बायां हाथ

1 ‖ त – | – – | त – | – – ‖

दा बा दा बा

2 ‖ त – | त – | त – | त – ‖

दा बा दा बा दा बा दा

3 ‖ त त | त त | त त | त – ‖

दा बा दा दा बा दा बा दा बा दा

4 ‖ त त | त – | तत तत | तत त ‖

दा बा दा बा दा बा दा दा बा दा बा दा बा दा

5 ‖ तत तत | तत त | तत तत | तत त ‖

दा बा दा बा दा दा बा दा बा दा

6 ‖ तत तत | त – | तत तत | त – ‖

दा बा दा बा दा दा बा दा बा दा दा बा दा बा दा दा बा दा बा दा

7 ‖ तततत त | तततत त | तततत त | तततत त ‖

त्र = त^त त^त त^त त^त

8 ‖ त्र त | त्र त | त्र त | त्र त ‖

9 ‖ तततत तततत | त – | तततत तततत | त – ‖

10 ‖ त्र ऽ | त – | त्र ऽ | त – ‖

11 ‖ तततत त्र | त – | तततत त्र | त – ‖

12 ‖ तत त्र | त – | तत त्र | त – ‖

# आनक पाठ - केरवा ताल

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | दा बा दा बा | | | | |
| 1 | ‖ | त त | त त त त | ‖ त त | त | ‖ |
| | | दा बा/दा बा | | | | |
| 2 | ‖ | त त | त – त त | ‖ त त | त | ‖ |
| | | दा बा द्रा बा | | | | |
| 3 | ‖ | त त | त त – त | ‖ त त | त | ‖ |
| | | दा बा दा ब्रा | | | | |
| 4 | ‖ | त त | त त त – | ‖ त त | त | ‖ |
| | | दा ब्रा द्रा बा | | | | |
| 5 | ‖ | त त | त – – त | ‖ त त | त | ‖ |
| 6 | ‖ | त त | त्र | ‖ त त | त | ‖ |
| 7 | ‖ | त त | त त्र | ‖ त त | त | ‖ |
| 8 | ‖ | त त्र | त त्र | ‖ त त | त | ‖ |
| 9 | ‖ | त त | त्र त | ‖ त त | त | ‖ |
| 10 | ‖ | त त | – त | ‖ त त | त | ‖ |
| 11 | ‖ | त त | – त्र | ‖ त त | त | ‖ |
| 12 | ‖ | त त | – – त त | ‖ त त | त | ‖ |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 13 | ‖ | त्र त | त्र त | ‖ त त | त | ‖ |
| 14 | ‖ | त त्र | ऽ त | ‖ त त | त | ‖ |
| 15 | ‖ | त्र | ऽ त | ‖ त त | त | ‖ |
| 16 | ‖ | त्र | ऽ | ‖ त त | त | ‖ |
| 17 | ‖ | त्र | ऽ | ‖ ऽ | त | ‖ |
| 18 | ‖ | थ | थ | ‖ त त | त | ‖ |
| 19 | ‖ | थ्र | थ्र | ‖ त त | त | ‖ |
| 20 | ‖ | थ त | थ त | ‖ त त | त | ‖ |
| 21 | ‖ | + | + | ‖ त त | त | ‖ |
| 22 | ‖ | त त | ++ | ‖ त त | त | ‖ |
| 23 | ‖ | ++ | ++ | ‖ त त | त | ‖ |
| 24 | ‖ | त्र त | त त्र | ‖ त त | त | ‖ |

# आनक पाठ - खेमटा ताल

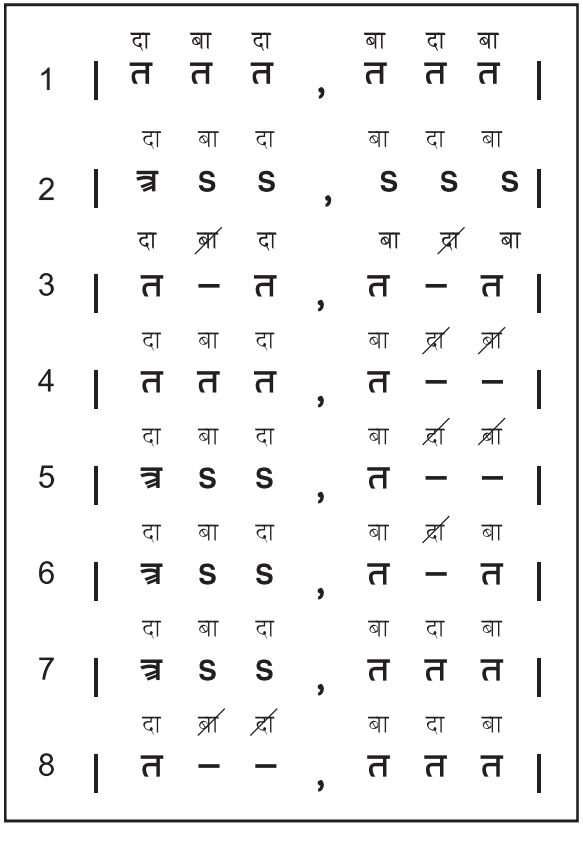

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | दा | बा | दा | | बा | दा | बा |
| 1 | \| | त | त | त | , | त | त | त \| |
| | | दा | बा | दा | | बा | दा | बा |
| 2 | \| | त्र | ऽ | ऽ | , | ऽ | ऽ | ऽ \| |
| | | दा | ~~बा~~ | दा | | बा | ~~दा~~ | बा |
| 3 | \| | त | – | त | , | त | – | त \| |
| | | दा | बा | दा | | बा | ~~दा~~ | ~~बा~~ |
| 4 | \| | त | त | त | , | त | – | – \| |
| | | दा | बा | दा | | बा | ~~दा~~ | ~~बा~~ |
| 5 | \| | त्र | ऽ | ऽ | , | त | – | – \| |
| | | दा | बा | दा | | बा | ~~दा~~ | बा |
| 6 | \| | त्र | ऽ | ऽ | , | त | – | त \| |
| | | दा | बा | दा | | बा | दा | बा |
| 7 | \| | त्र | ऽ | ऽ | , | त | त | त \| |
| | | दा | ~~बा~~ | ~~दा~~ | | बा | दा | बा |
| 8 | \| | त | – | – | , | त | त | त \| |
| | | दा | ~~बा~~ | दा | | बा | दा | बा |
| 9 | \| | त | – | त | , | त | त | त \| |
| | | दा | ~~बा~~ | दा | | बा | दा | बा |
| 10 | \| | त | – | त | , | त्र | ऽ | ऽ \| |
| | | दा | बा | दा | | बा | दा | बा |
| 11 | \| | त | त | त | , | त्र | ऽ | ऽ \| |
| | | दा | बा | दा | | बा | ~~दा~~ | बा |
| 12 | \| | त | त | त | , | त | – | त \| |
| | | दा | ~~बा~~ | दा | | बा | दा | ~~बा~~ |
| 13 | \| | त | – | त | , | त | त | – \| |
| | | दा | बा | दा | | बा | दा | ~~बा~~ |
| 14 | \| | त | त | त | , | त | त | – \| |
| | | दा | बा | दा | | बा | दा | ~~बा~~ |
| 15 | \| | त्र | ऽ | ऽ | , | त | त | – \| |
| | | दा | बा | ~~दा~~ | | बा | दा | ~~बा~~ |
| 16 | \| | त | त | – | , | त | त | – \| |

# आनक प्रगत पाठ - खेमटा ताल

दा बा दा बा दा बा

1 | त – त्र , त त त |
2 | त – त्र , त – त |
3 | त – त्र , त – त्र |
4 | त – त , त – त्र |
5 | त त त , त – त्र |
6 | त्र ऽ ऽ , त – त्र |
7 | त्र ऽ ऽ , ऽ त – |
8 | त्र ऽ ऽ , ऽ ऽ त |

दा बा दा बा दा बा

9 | त्र ऽ ऽ , ऽ त त |
10 | त्र ऽ ऽ , ऽ त त्र |
11 | त्र ऽ ऽ , त त त्र |
12 | त त त , त त त्र |
13 | त त – , त त – |
14 | त्र त – , त्र त – |
15 | त्र त – , त त त |
16 | त्र त – , त्र ऽ ऽ |

दा बा दा बा दा बा

17 | त्र – त , त्र – त |
18 | त्र – त्र , त्र – त्र |
19 | त्र ऽ ऽ , त त्र त |
20 | त त्र त , त त्र त |
21 | त त्र त , त – त्र |
22 | त त्र त , त्र ऽ ऽ |
23 | त – त्र , ऽ ऽ ऽ |
24 | त त त , त्र त त |

25 ‖ त त त , त त त | त त त , त – – ‖
26 ‖ त्र ऽ ऽ , ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ , त – – ‖
27 ‖ त – त , त – त | त – त , त – – ‖

28 ‖ त्र ऽ ऽ , त त त | त्र ऽ ऽ , त – – ‖
29 ‖ त्र ऽ ऽ , त – त्र | त – त्र , त – – ‖
30 ‖ त – त्र , त – त्र | त – त्र , त – – ‖

31 ‖ त त त , त त त | त त त , त त त | त त त , त त त | त – – , – – – ‖
32 ‖ त्र ऽ ऽ , ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ , ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ , ऽ ऽ ऽ | त – – , – – – ‖
33 ‖ त्र ऽ ऽ , त त त | त्र ऽ ऽ , त – त | त्र ऽ ऽ , त – त्र | त – – , – – – ‖

# आनक प्रगत पाठ - केरवा ताल

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | ‖ | तत | त्त्र–तत | \| | तत | त | ‖ |
| 2 | ‖ | तत | त्त–तत | \| | तत | त | ‖ |
| 3 | ‖ | तत | त्र–तत | \| | तत | त | ‖ |
| 4 | ‖ | तत | तत–त्र | \| | तत | त | ‖ |
| 5 | ‖ | तत | त्रत–त | \| | तत | त | ‖ |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 6 | ‖ | तत | त––त्र | \| | तत | त | ‖ |
| 7 | ‖ | तत | त्र––त्र | \| | तत | त | ‖ |
| 8 | ‖ | –त | –त | \| | –त | त | ‖ |
| 9 | ‖ | –त्र | –त | \| | –त्र | त | ‖ |
| 10 | ‖ | –त | तत–– | \| | तत | त | ‖ |

| | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 11 | ‖ | तततत | तततत | \| | तततत | तततत | \| | तततत | तततत | \| | त | – | ‖ |
| 12 | ‖ | त्र | ऽ | \| | ऽ | ऽ | \| | ऽ | ऽ | \| | त | – | ‖ |
| 13 | ‖ | त्र | ऽ | \| | त–तत | तत–त | \| | त्र | ऽ | \| | त | – | ‖ |
| 14 | ‖ | त्र | ऽ | \| | तत्र | ऽत | \| | त्र | ऽत | \| | त | – | ‖ |
| 15 | ‖ | त्र | त––त | \| | त्र | त––त | \| | त्र | तत–त्र | \| | त | – | ‖ |
| 16 | ‖ | त्रत | त्रत | \| | त्र | ऽ | \| | ऽत | तत्र | \| | त | – | ‖ |
| 17 | ‖ | त्रत | तत्र | \| | तत्र | ऽत | \| | त्त्र–तत | त्र | \| | त | – | ‖ |

**आनक** **श्रीराम** **केरवा-१२०**

||ॐ|| तत ततऽत | त्र तत | तऽतत तत | त ऽ ||

|| त्र तत | तत्र तत | तऽतत तत | त्र ऽत |

| त्र तत | तत्र तत | तऽतत तत | त ऽ :||

|| ततऽत तत | तत्र तत | ततऽत तत | त्र ऽ |

| ततऽत तत | तत्र तत | ततऽत तत्र | त ऽ :||

|| त्रत त्रत | तऽऽत तत | तत ऽत | त्र त |

| त्रत त्रत | तऽऽत तत | तत ऽत | त ऽ :||

**आनक** **उदय** **खेमटा -३६०**

||ॐ|| त्रऽऽ , ऽऽऽ | तऽत , तऽत | तऽऽ , ततत | तऽऽ , ऽऽऽ ||

|| तऽत , तऽत | तऽत , तऽत | त्रऽऽ , ऽऽऽ | तऽऽ , तऽऽ |

| तऽत , तऽत | तऽत , तऽत | त्रऽऽ , तऽत | तऽऽ , ऽऽऽ :||

|| त्रऽऽ , तऽत | ततत , तऽऽ | तऽत , ततऽ | ततत , तऽऽ |

| त्रऽऽ , तऽत | ततत , तऽऽ | तऽत , ततऽ | तऽऽ , ऽऽऽ :||

आनक **सोनभद्र** केरवा-१२०

| | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ॥ॐ॥ | त्र | तत | । | त्र | त | । | तत | –त | । | त | – | ॥ |
| ॥ | तत | तत | । | त्र | त | । | तत | तत | । | त्र | त | । |
| । | तत | तत | । | त्र | ऽ | । | त–तत | तत | । | त | – | :॥ |
| ॥ | त–तत | तत | । | –त | –त | । | त–तत | तत | । | त्र | ऽत | । |
| । | त–तत | तत | । | –त | –त | । | त–तत | ततत– | । | त | – | :॥ |
| ॥ | तत | –त | । | त्र | ऽ | । | तत | –त | । | थ्र | थ्र | । |
| । | तत | –त | । | त्र | ऽ | । | तत | –त्र | । | त | – | :॥ |
| ॥ | त––त | तत | । | त्रत | त | । | त––त | तत | । | तत्र | त | । |
| । | त––त | तत | । | त्रत | त | । | तत्र | ऽत | । | त | – | :॥ |

आनक **किरण** केरवा -१२०

॥ॐ॥ त त | त तत | त त्र | त – ॥

॥ त त्र | त त | तत्र तत्र | तत तत |

| त त्र | त त | त्र ऽ | त – :॥

॥ तत्र तत | त त | त––त तत | त त्र |

| तत्र तत | त त | त––त तत | त – :॥

आनक **गायत्री** खेमटा-३६०

॥ॐ॥ | , ––त्र ॥

॥ त–त , त–त | त–त्र , त–त्र | त–त , त–त | त–– , ततत |

| त–त , त–त | त–त्र , त–त्र | त–त , त–त | त–– , –––:॥

, ––त्र ॥

॥ त–त्र , त–त | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–त , त–त्र | त–– , ततत |

| त–त्र , त–त | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–त , त–त्र | त–– , –––:॥

आनक **मरुधर** खेमटा-३६०

‖ॐ‖ त-- , त-त | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त-- , त-त्र | त-- , --- ‖

‖ त्रऽऽ , त-त | त-- , त-त | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त-त , त-- |

| त्रऽऽ , त-त | त-- , त-त | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त-- , ---:‖

‖ त-त , त्रऽऽ | त-त , त्रऽऽ | त-त , त-त | त्रऽऽ , ऽऽऽ |

| त-त , त्रऽऽ | त-त , त्रऽऽ | त-त , त-त | त-- , ---:‖

‖ त-त , त-- | त्रऽऽ , त-- | त्रऽऽ , त-त | त्रऽऽ , त-- |

| त-त , त-- | त्रऽऽ , त-- | त्रऽऽ , त-त्र | त-- , ---:‖

आनक **मेवाड़** केरवा -१२०

‖ॐ‖ -त -त | त्र ऽ | त त--त्र | त - ‖

‖ त त--त्र | त - | त त--त | त - |

| त त--त | त्र ऽ | त त--त्र | त - :‖

‖ त्र ऽ | ऽ त | त--त्र त | त्र त |

| त्र ऽ | ऽ त | त -त्र | त - :‖

‖ तत्र तत | त्र तत | -त -त | -त -त |

| तत्र तत | त्र तत | त त--त्र | त - :‖

आनक

# चेतक

खेमटा-३६० केरवा-१२०

‖ॐ‖ , – – त्र ‖

‖ त – त , त – त | त – – , – – त्र | त – त , त – त | त – – , – – त्र |

| त – – , – – त्र | त – – , – – त्र | S S S , S S S | त – – , – – – ‖

‖ तत्र तत | त – – त तत | – त्र तत | तत त |

| त – – त तत | – त्र तत | त – – त तत | त – :‖

‖ तततत त | तत्र त | तततत त | तत्र त |

| तततत त | तत्र त | थत थत | त्र तत |

| – – तत तत | त – :‖

‖ त्र S | तततत तततत | त्र S | त – – त तत ‖

आनक **अजेय** केरवा-१२०

‖ॐ‖ त––त तत्र | त––त तत्र | त त्र | त – ‖

‖ त्रत तत | त्र–तत तत | तत –त | त्र त |

| त्रत तत | त्र–तत तत | त्र ऽ | त – :‖

‖ त––त तत | त त्र | तत–त तत | त त्र |

| त––त तत | त ++ | तत्र तत्र | त – :‖

‖ त+ ++ | त–तत तत | त+ ++ | त–तत तत |

| तततत त | त्र त | तततत तत | त – :‖

आनक **दशमेश** खेमटा-३६०

‖ॐ‖ त–त , त–– | त–त्र , त–– | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–– , ––– ‖

‖ ततत , त–त | थ्र–– , थ्र–– | त्रऽऽ , त–त | त्रऽऽ , ऽऽऽ |

| ततत , त–त | थ्र–– , थ्र–– | त्रऽऽ , ततत | त–– , –––:‖

‖ त–त्र , त–त्र | ततत , त–– | त्रऽऽ , ऽऽऽ | ततत , त–– |

| त–त्र , त–त्र | ततत , त–– | त–त्र , त–त्र |[१] त–– , –––:‖

|[२] त–– , ––त्र ‖

‖ ततत , त–त | त्र̂ऽऽ , ऽ̂ऽऽ | ऽ̂ऽऽ , ऽ̂ऽऽ | ऽ̂ऽऽ , त–त्र |

| ततत , त–त | त्र̂ऽऽ , ऽ̂ऽऽ | ऽ̂ऽऽ ऽ̂ऽऽ |[१] त–– , ––त्र:‖

|[२] त–– , ––– ‖

आनक **दीप** खेमटा-३६०

‖ॐ‖ ततत , त्रऽऽ | त–त , त–त | त्रऽऽ , ततत | त–– , ––– ‖

‖ त–त , त–त | त्रऽऽ , ऽऽऽ | ततत , ततत | त–त , त–त |

| त–त , त–त | त्रऽऽ , ऽऽऽ | ततत , ततत |[1] त–– , ––– :‖

|[2] त–– , ––त्र ‖

‖ ऽऽत , ततत | त–त , ततत | त–त , त–त | त्रऽऽ , ऽऽऽ |

| ऽऽत , ततत | त–त , ततत | ततत , तत– |[1] त–– , ––त्र :‖

|[2] त–– , ––– ‖

‖ त–त , त–त | त–त , त–त | त–त , ततत | ततत , त–– |

| त–त , त–त | त–त , त–त | त्रऽऽ , ततत | त–– , ––– :‖

आनक **तरंग** केरवा-१२०

||ॐ|| त–तत  तत | त्र  ऽ | त–तत  तत | त  –त ||

|| त्र  तत | त्र  तत | त्र  तत | थत  थत |

| त्र  तत | थत  थत | त्र  तत | त  –त :||

|| थत  थत | थ–तत  तत | थत  थत | थ–तत  तत |

| थत  थत | थ–तत  तत | त–तत  तत्र | त  –त :||

|| त्र  तत | थत  थत | त्र  तत | त्र  तत |

| त्र  तत | थत  थत | त्र  तत्र |[१] त  –त :||

|[२] त  – ||

आनक **मंगला** खेमटा-३६०

‖ॐ‖ त–त्र , त–त्र | त–त्र , त–– | त्रत– , त्रत– | त–– , ––– ‖

‖ त–त , त–त | त–– , ततत | त–त , त–त | त–– , ततत |

| त–त , त–त | त–त , त–– | त्रऽऽ , ऽऽऽ |¹ त–– , –––:‖

|² त–– , ––त्र ‖

‖ त–त्र , त–त्र | त–त्र , त–– | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–– , ––त्र |

| त–त्र , त–त्र | त–त्र , त–– | त्रऽऽ , ऽऽऽ |¹ त–– , ––त्र:‖

|² त–– , ––– ‖

‖ ततत , त–त | त्रऽऽ , ऽत– | ततत , ततत | थ्र–– , थ्र–– |

| ततत , त–त | त्रऽऽ , ऽत– | ततत , त–त्र | त–– , –––:‖

‖ त्रत– , ––– | त्रत– , ––– | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–– , ––– |

| त्रत– , ––– | त्रत– , ––– | त्रऽऽ , तत– | त–– , –––:‖

आनक

# विनायक

केरवा-१२०

| | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ॥ॐ॥ | त्र | ऽ | । | तत | –त | । | ततत– | तत्र | । | त | – | ॥ |
| ॥ | –त्र | तत | । | –त | तत | । | –त्र | तत | । | ––तत | त | । |
| । | –त्र | तत | । | –त | तत | । | –त | –त | । | त्र | ऽत | । |
| । | –त्र | तत | । | –त | तत | । | –त्र | तत | । | ––तत | त | । |
| । | –त | –त | । | –त | –त | । | तततत | त––त | । | त | – | :॥ |
| ॥ | तत्र | ऽत | । | ++ | ++ | । | थ̂त | थ̂त | । | त्र̂–तत | तत | । |
| । | तत | –त | । | –त | –त | । | तततत | तत | । | तत्र | तत | । |
| । | तत्र | ऽत | । | ++ | ++ | । | थ̂त | थ̂त | । | त्र̂–तत | तत | । |
| । | तत | –त | । | –त | –त | । | –त्र | तत | । | त | – | :॥ |
| ॥ | तत्र | त | । | ++ | + | । | ततत– | तत | । | त्र | ऽ | । |
| । | तत्र | त | । | ++ | + | । | ततत– | तत | । | त | – | :॥ |

आनक

# श्रीनिवास

खेमटा-३६०

‖ॐ‖ त–त , त–त | त–त्र , त–त्र | त–त , त–त | त्रऽऽ , त–– ‖

‖ त–त , ततत | त–त , त्रऽऽ | त–त , ततत | त–त , त–– |

| त–त , ततत | त–त , त्रऽऽ | ततत , ततत | त्रऽऽ , त––:‖

‖ त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–त्र , त–त्र | ततत , त–– | ततत , त–– |

| त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–त्र , त–त्र | ततत , त–त्र | त–– , –––:‖

‖ त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–त , त–त | त्रऽऽ , त–त | त्रऽऽ , त–– |

| त–त , त–त | त–त , त–त | त्रऽऽ , त–त | त–– , –––:‖

आनक | **परमार्थ** | केरवा-१२०

||ॐ|| तत–त   तत | तत–त   तत | तत–त   त्र | त   – ||

|| त   तततत | तत्र   त | तत्र   त | तत   तत |

| त   तततत | तत्र   त | तत्र   तत्र | त   – :||

|| त––त   तत | त––त   तत | ततत–   ततत– | त्र   ऽ |

| त––त   तत | त––त   तत | ततत–   तत | त   – :||

|| त–तत   त–तत | तत   त | त्रत   त्रत | तत   त |

| त–तत   त–तत | तत   त | त्रत   त्रत | त   – :||

|| –त   –त | तत–त   तत | तत–त   त्र | ऽ   त |

| –त   –त | तत–त   तत | त   त्र | त   – :||

आनक

## प्रतिध्वनि

खेमटा-३६०

‖ॐ‖ त–त , त्रऽऽ | त–– , त–त | त–त , त्रऽऽ | ततत , त–त |

| त–त , त्रऽऽ | त–– , त–त | ततत , ततत | त्रऽऽ , त––:‖

‖ त–– , त–– | त–– , त–– | त–त , त–त | त्रऽऽ , ऽऽऽ |

| त–– , त–– | त–– , त–– | त–त , त–त |[१] त–– , –––:‖

|[२] त–– , ––त्र ‖

‖ त–त्र , त–त्र | ततत , त–त्र | त–त्र , त–त्र | त–– , ––त्र |

| त–त्र , त–त्र | ततत , त–त्र | त–त्र , त–त्र |[१] त–– , ––त्र:‖

|[२] त–– , ––– ‖

आनक

# विक्रम

खेमटा-३६०

‖ॐ‖ त–त , तत– | त–त , तत– | त–– , त्रत– | त–– , ––– ‖

‖ त–त , तत– | त–– , तत– | त्रत– , त्रत– | त्रSS , SSS |

| त–त , तत– | त–– , तत– | ततत , तत– | त–– , –––:‖

‖ त–त्र , त–त | त–त्र , त–– | त–– , त–– | तत– , त–– |

| त–त्र , त–त | त–त्र , त–– | त्रSS , त–त | त–– , –––:‖

‖ ततत , तत– | त्रSत , तत– | त–त , त–त | त–त्र , त–त्र |

| ततत , तत– | त्रSत , तत– | त–त्र , तत– | त–– , –––:‖

‖ त्रत– , त्रत– | ––– , तत– | त्रSS , SSS | ततत , त–– |

| त्रत– , त्रत– | ––– , तत– | त्रSS , तत– | त–– , –––:‖

आनक — **रणजित** — केरवा-१२०

||ॐ|| त्र–तत  तत | –त  –त | ––तत  तत | त  – ||

|| त्र  ऽत | त्र  ऽत | त––त  त––त | थ्र  थ्र |

| त्र  ऽत | त्र  ऽत | त––त  त––त |[१] त  – :||

|[२] त  –त्र ||

|| त–तत  त–तत | त्र  ऽ | ततत–  तत | त  –त्र |

| त–तत  त–तत | त्र  ऽ | ततत–  तत्र |[१] त  –त्र :||

|[२] त  – ||

|| त्रत  त्रत | त––त  त | त–तत  तततत | ––तत  त |

| त्रत  त्रत | त––त  त | त–तत  तततत | त  – :||

|| तत–त  तत | त्र  तत | थत  थत | थत  थत |

| तत–त  तत | त्र  तत | त्रत  त्रत | त  – :||

आनक | जगन्नाथ | खेमटा-३६०

‖ॐ‖ त्रतत , त–त | त्रतत , त–त | त–– , त्रऽऽ | त–– , ––– ‖

‖ त्र–त्र , त–– | त्र–त्र , त–– | त–– , तत्रत | त–– , ––– |

| त्र–त्र , त–– | त्र–त्र , त–– | त–– , तत्रत |१ त–– , –––:‖

|२ त–– , ––त्र ‖

‖ त–त , त्र–त्र | त–– , ––त्र | ऽऽऽ , त–त | त–– , ––त्र |

| त–त , त्र–त्र | त–– , ––त्र | तत्रत , त–त्र |१ त–– , ––त्र :‖

|२ त–– , ––– ‖

‖ त्रऽऽ , त–– | त्रऽऽ , ऽऽऽ | ऽऽऽ , तत– | ––– , ––– |

| त्रऽऽ , त–– | त्रऽऽ , ऽऽऽ | ऽऽऽ , त–त |१ त–– , –––:‖

|२ त–– , ––त्र ‖

‖ त–त , त–त्र | त–त , त–त्र | त–त , त–त्र | त–– , ––त्र |

| त–त , त–त्र | त–त , त–त्र | त–– , त्रतत |१ त–– , ––त्र :‖

|२ त–– , ––– ‖

आनक　　　　**साकेत**　　　　केरवा १२० खेमटा-३६०

‖ॐ‖ –त्र ‖

‖ त–तत तत | त –त्र | त–तत तत | त –त्र |

| त–तत तत | त – | त ––तत | त – ‖

‖ त्रऽऽ , ऽऽऽ | ऽऽऽ , त–– | त–त , ततत | त–– , ––– |

| त्रऽऽ , ऽऽऽ | ऽऽऽ , त–– | त–त्र , ततत | त–– , –––:‖

‖ तत–त्र त | तत–त्र त | थत थत | त–तत त |

| तत–त्र त | तत–त्र त | थत त्र–तत | त – :‖

‖ थ्र–– , ततत | थ्र–– , ततत | ततत , ततत | त–त्र , त–– |

| थ्र–– , ततत | थ्र–– , ततत | ततत , त्रऽऽ | त–– , –––:‖

‖ त्र ऽ | त+ ++ | तत–त तत्र | त––त्र तत |

| त्र ऽ | त+ ++ | तत–त्र तत्र | त – :‖

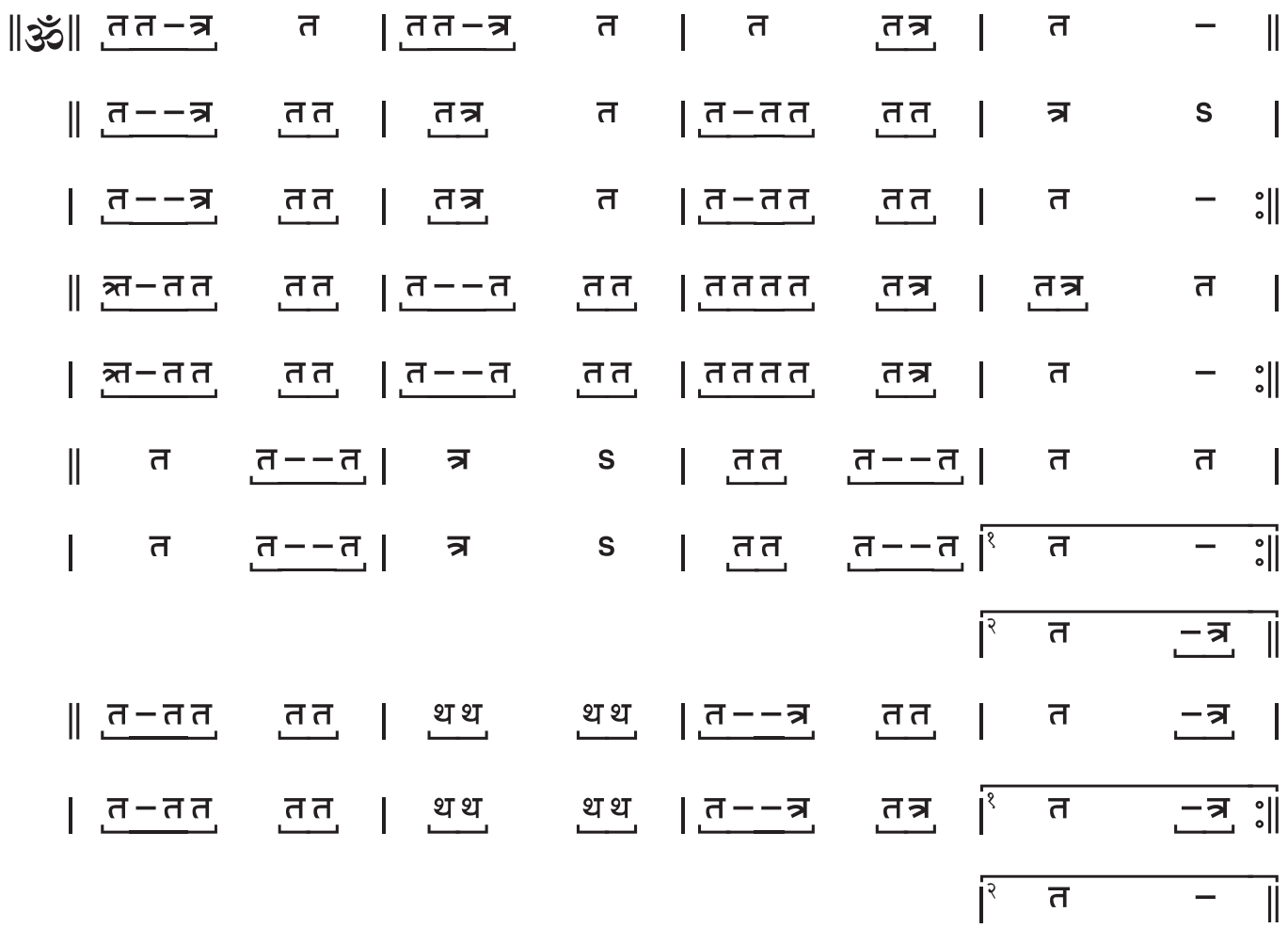
‖ॐ‖ तत–त्र त | तत–त्र त | त तत्र | त –
‖ त––त्र तत | तत्र त | त–तत तत | त्र s |
| त––त्र तत | तत्र त | त–तत तत | त –
‖ त्त–तत तत | त––त तत | तततत तत्र | तत्र त |
| त्त–तत तत | त––त तत | तततत तत्र | त –
‖ त त––त | त्र s | तत त––त | त त |
| त त––त | त्र s | तत त––त | १ त –
२ त –त्र ‖
‖ त–तत तत | थथ थथ | त––त्र तत | त –त्र |
| त–तत तत | थथ थथ | त––त्र तत्र | १ त –त्र
२ त – ‖

आनक

# सुधीर

केरवा-१२०

||ॐ|| त–तत  तत | तत  तत | त  त्र | त  – ||

|| त्र  तत | तत  तत | त्र  तत | तत  तत |

| त्र  तत | त्र  ऽ | ऽ  तत | तत  तत |

| त्र  तत | तत  तत | त्र  त––त | त  – :||

|| त्र  ऽऽऽत | त  – | त्र  ऽऽऽत | त  – |

| त्र  ऽऽऽत | त्र  ऽऽऽत | त्र  ऽऽऽत | त  – |

| त्र  ऽऽऽत | त  – | त्र  ऽऽऽत | त  – |

| त्र  ऽऽऽत | त्र  ऽऽऽत | त्र  ऽ | त  – :||

|| तत  तत | तत  त्र | तत  तत | तत  त्र |

| तत  तत | तत  त्र | त–तत  तत | त  – :||

|| तत  तत | तत  तत | त  त्र | त  – |

| तत  तत | तत  तत | त्र  ऽ | त  – :||

आनक बजरंग खेमटा-३६० केरवा-१२०

||ॐ|| ततत , ततत | ततत , त-- | त-त्र , त-त्र | त-- , --- ||

|| त-त , तत्रत | त-त , तत्रत | त-त , त्रSS | SSS , त-त्र |

| त-त , तत्रत | त-त , तत्रत | त्रSS , तत्रत |[1] त-- , --- :||

[2] त-- , --त्र ||

|| त-त्र , त-त्र | त-त , त-- | त्रSS , त-त | --- , --त्र |

| त-त्र , त-त्र | त-त , त-- | त्रSS , SSS |[1] त-- , --त्र :||

[2] त-- , --- ||

|| तत्र तत्र | तत त | त-तत त्रत | तत्र त |

| त्रत-तत तत | त्र त | त्रत त्रत | त्र त |

| तत्र तत्र | तत त | त-तत त्रत | तत्र त |

| त्रत-तत तत | त्र त | त त--त्र | त - :||

|| त्रत तत्र | तततत तत | तत्र Sत | ततत- त |

| त्रत तत्र | तततत तत | त -त्र | त - :||

| आनक | | | | सागर | | | | केरवा-१२० | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ॥ॐ॥ | त्र | ऽ | ऽ | ऽ | त | त | त––त | तत | । |
| । | त्र | ऽ | ऽ | ऽ | त | त | त––त | तत | । |
| । | त्र | ऽ | ऽ | ऽ | त | त्र | त | – | ॥ |
| ॥ | त | त––त | त | त––त | त्र | ऽ | त–तत | तत | । |
| । | त–तत | तत्र | त–तत | तत | त | – | ++ | + | । |
| । | त––त | त्र | ऽ | त–तत | तत | त–तत | तत्र | त–तत | । |
| । | तत | त | – | ++ | + | तत्र | त | – | :॥ |
| ॥ | त्र | ऽ | तत | तत | त्र | ऽ | तत | तत | । |
| । | तत | –त | –त | –त | त–तत | तत | त | –त | । |
| । | त्र | ऽ | तत | तत | त्र | ऽ | तत | तत | । |
| । | तत | –त | –त | –त | त–तत | तत्र | त | – | :॥ |
| ॥ | तत | –त | तत | –त | तत | तत्र | तत्र | तत | । |
| । | –त | तत | –त | तत | –त | –त | त | – | :॥ |

आनक   **वीरश्री**   एकताल-१२०

‖ॐ‖ तततत   तत | त्र   ऽ | त   – ‖

‖ त   तत | त   तत | त–तत   तत |

| तत   तत | त–तत   तत | त्र   त :‖

‖ तत   त्र | तत   त्र | तत   तत्र |

| तत   तत्र | त   त्र | त   – :‖

‖ त्र   तत | त्र   तत | त   तत |

| त   तत | त्र   तत | त   तत |

| त   तत | तत   तत | त्र   तत |

| त्र   तत | त   त्र | त   – :‖

‖ॐ‖ त–त , ततत | त–त , त–त्र | त–– , त्त–– | त–– , ––– ‖
‖ त–त्र , ततत | त–त , त–त | त–त्र , ततत | त्रऽऽ , ऽऽऽ |
| त–त्र , ततत | त–त , त–त | त्रऽऽ , त–त | त–– , –––ः‖
‖ त्रऽऽ , त–त | त–त्र , त–त्र | ततत , त–त | त–– , त–– |
| ततत , त–त | त–त्र , त–त्र | ततत , त–त | त्रऽऽ , त–– |
| त्रऽऽ , त–त | त–त्र , त–त्र | ततत , त–त | त–– , त–– |
| ततत , त–त | त–त , त–त | ततत , त–त | [१] त–– , –––ः‖
[२] त–– , ––त्र ‖
‖ ततत , ततत | ++– , ++– | त–त्र , त–त्र | त–– , त–त्र |
| ततत , ततत | ++– , ++– | त–त्र , त–त्र | त–– त–– ‖
‖ त–त्र , ततत | त–त्र , ततत | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–त , त–त |
| त–त्र , ततत | त–त्र , ततत | ततत , त्रऽऽ | त–– , –––ः‖
‖ ततत , त–त | त–– , ––त्र | त–त , त–त | त्रऽऽ , ऽऽऽ |
| ततत , त–त | त–– , ––त्र | त–त , त–त | त–– , –––ः‖

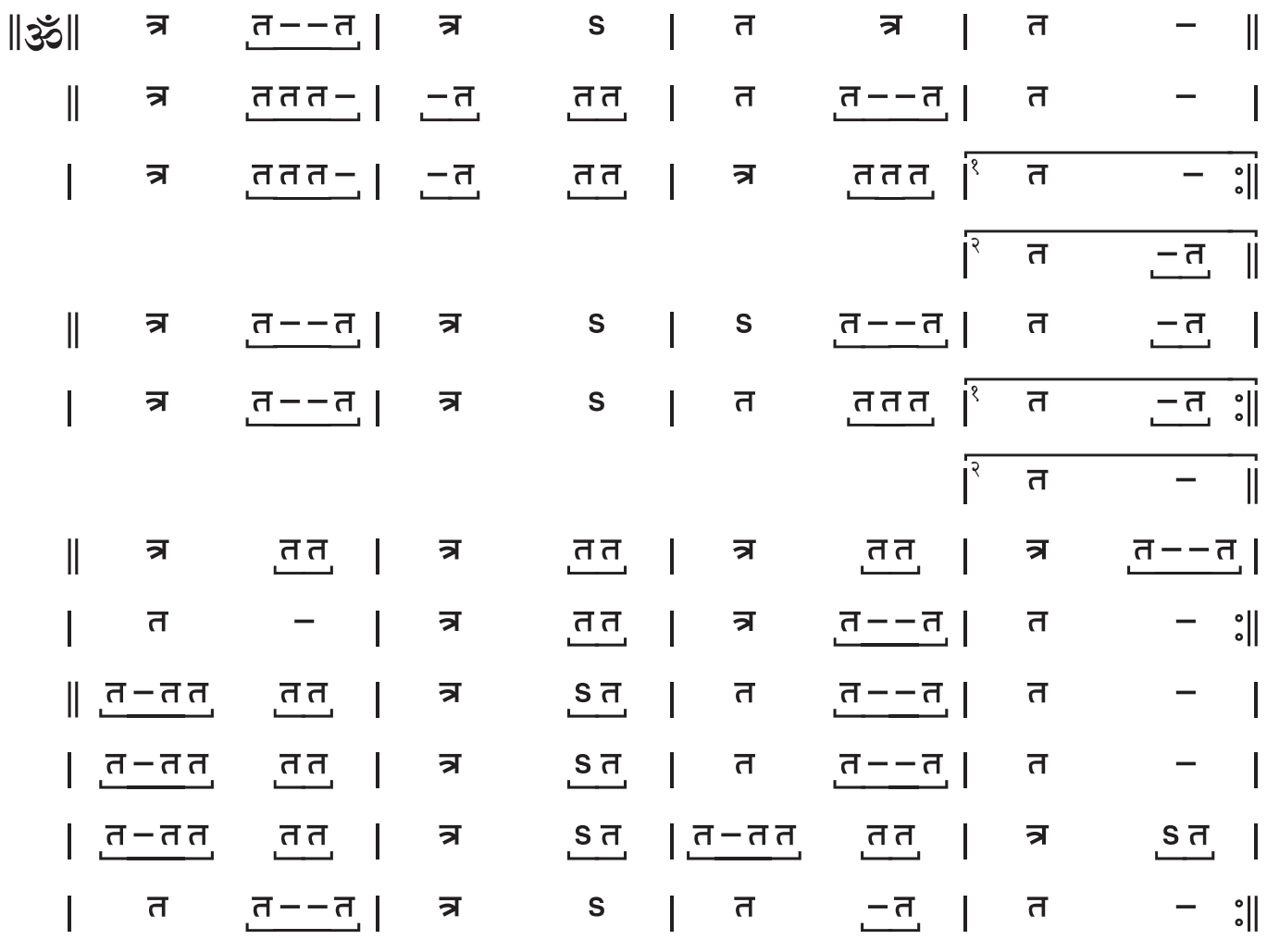

आनक　　　　　　　　**भास्कर**　　　　　　　　केरवा-१२०

‖ॐ‖ त्र त--त | त्र ऽ | त त्र | त - ‖

‖ त्र ततत- | -त तत | त त--त | त - |

| त्र ततत- | -त तत | त्र ततत |¹ त - :‖

|² त -त ‖

‖ त्र त--त | त्र ऽ | ऽ त--त | त -त |

| त्र त--त | त्र ऽ | त ततत |¹ त -त :‖

|² त - ‖

‖ त्र तत | त्र तत | त्र तत | त्र त--त |

| त - | त्र तत | त्र त--त | त - :‖

‖ त-तत तत | त्र ऽत | त त--त | त - |

| त-तत तत | त्र ऽत | त त--त | त - |

| त-तत तत | त्र ऽत | त-तत तत | त्र ऽत |

| त त--त | त्र ऽ | त -त | त - :‖

आनक

# नीलकंठ

खेमटा-३६० केरवा-१२०

||ॐ|| त्रSS  ततत्र | त–त्र , त–– | ततत्र , ततत्र | त–– , –त्र ||
|| S  S | त–तत  त | तततत  तततत | त  –त्र |
| S  S | त–तत  त | तततत  तततत |¹ त  –त्र :||
|² त  – ||

|| तत्र  तत्र | तत्र  Sत | त्र  Sत | थ्र  थ्र |
| तत्र  तत्र | तत्र  Sत | त्र  Sत |¹ त  – :||
|² त  –त्र ||

|| त  तत्र | त  तत्र | त––त  तत | त  –त्र |
| त  तत्र | त  तत्र | त––त  तत्र |¹ त  –त्र :||
|² त  – ||

|| त–त्र , त–त्र | ततत , त–त | त्रSS , SSS | SSS , त–– |
| त–त्र , त–त्र | ततत , त–त | त्रSS , ततत्र | त–– , ––– :||

|| तत्र  Sत | त्रत  त्रत | त  ––तत | त  श्र |
| तत्र  Sत | त्रत  त्रत | त  त्र | त  – :||

|| –त  तत | –त्र  तत | ––तत  तत | त्र  तत्र |
| –त  तत | –त्र  तत | ––तत  त्र | त  – :||

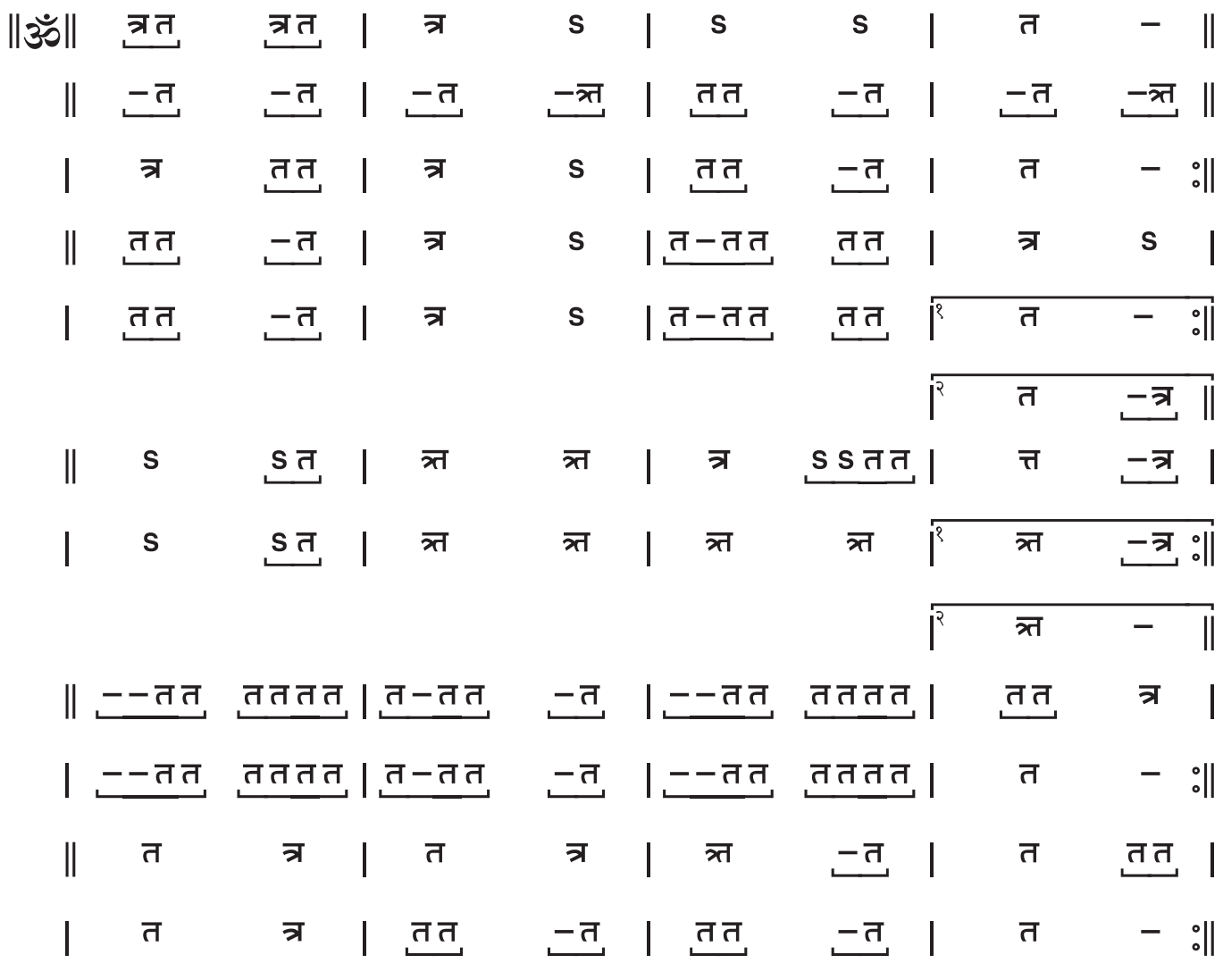

आनक

# निनाद

केरवा-१२०

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ‖ॐ‖ त्रत | त्रत | त्र | ऽ | ऽ | ऽ | त | − ‖ |
| ‖ −त | −त | −त | −त्‍त | तत | −त | −त | −त्‍त ‖ |
| त्र | तत | त्र | ऽ | तत | −त | त | − :‖ |
| ‖ तत | −त | त्र | ऽ | त−तत | तत | त्र | ऽ |
| तत | −त | त्र | ऽ | त−तत | तत | १ त | − :‖ |
| | | | | | | २ त | −त्र ‖ |
| ‖ ऽ | ऽत | त्‍त | त्‍त | त्र | ऽऽतत | त्त | −त्र |
| ऽ | ऽत | त्‍त | त्‍त | त्‍त | त्‍त | १ त्‍त | −त्र :‖ |
| | | | | | | २ त्‍त | − ‖ |
| ‖ −−तत | तततत | त−तत | −त | −−तत | तततत | तत | त्र |
| −−तत | तततत | त−तत | −त | −−तत | तततत | त | − :‖ |
| ‖ त | त्र | त | त्र | त्‍त | −त | त | तत |
| त | त्र | तत | −त | तत | −त | त | − :‖ |

आनक

# त्रिहुत

केरवा-१२० खेमटा-३६०

‖ॐ‖ त्त त्त | त्त त्र | ऽ त--त | त्र त |

| थ्र थ्र | थ्र थ्र | त्रऽऽ , ऽऽऽ | ऽऽऽ , त-- ‖

‖ त-त , त-त | त-त , त-त | त-त , त-त | त्रऽऽ , ऽऽत |

| त-त , त-त | त-त , त-त | त-त , त-त | त-- , ---:‖

‖ --त , त-- | --त , त-- | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त-त , त-- |

| --त , त-- | --त , त-- | त्रऽऽ , ऽऽऽ |[१] त-- , ---:‖

|[२] त-- , --त्र ‖

‖ त-त , ततत्र | त-त , ततत्र | त-त , त-त | त-- , --त्र |

| त-त , ततत्र | त-त , ततत्र | ततत , ततत्र |[१] त-- , --त्र :‖

|[२] त-- , --- ‖

‖ त्र त--त | तततत त- ‖

‖ त्र ऽ | ऽ ऽ | त --तत | तत त्र |

| ऽ ऽ | ऽ ऽ | त-तत तत | त - :‖

‖ त्रत + | त्रत त्त | तततत त्रत | त्र त |

| त्रत + | त्रत त्त | ततत- त्रत |[१] त - :‖

|[२] त --तत |

| त्र ऽ | ऽ ऽ | ऽ त-तत | त - ‖

आनक **वसंत** खेमटा-३६०

||ॐ|| त्रऽऽ , त–त | त–त , त्रऽऽ | ऽऽऽ , त–त | त–– , त्रऽऽ ||

|| त–त , त्रऽऽ | त–त , त्रऽत | त्रऽत , त्रऽत | त–त्र , ऽऽऽ |

| त–त , त्रऽऽ | त–त , त्रऽत | त्रऽत , त्रऽऽ | त–त , त––:||

|| त्रऽऽ , ततत | त–– , ––त्र | त–त , त–त | त्रऽऽ , ऽऽऽ |

| ऽऽऽ , ततत | त–– , ––त्र | ऽऽऽ , ततत | त–– , –––:||

|| त–त , त–त | त–त , त्रऽऽ | त–त , त्रऽऽ | ततत , त्रऽऽ |

| त–त , त–त | त–त , त–– | त्रऽऽ , त–त | त–– , –––:||

|| त–– , +–– | त्रऽऽ , ––त | ततत , त–त | त्रऽऽ , ऽऽत |

| त–– , +–– | त्रऽऽ , ––त | त्रऽऽ , त–त | ततत , त्रऽऽ |

| ऽऽऽ , त–– | ततत , त–त | ततत , त–त | त–– , –––:||

|| त–त , त–त | त–त , त–त | त–त , त–त | त–त , त्रऽऽ |

| त–त , त–त | त–त , त–– | त–त , त–त | त्रऽऽ , ऽऽऽ |

| त–त , त–त | त–त , त–– | त–त , त–त | त्रऽऽ , ऽऽऽ |

| त–त , त–त | त–त , त्रऽऽ | ऽऽऽ , त–त | त–– , –––:||

आनक

# प्रताप

खेमटा-३६०

‖ॐ‖ ततत , त–त | ततत , त–त | त्रऽऽ , ऽऽऽ | ऽऽऽ , ऽऽऽ |

| ऽऽऽ , ऽऽऽ | त–– , ––– | ततत , ततत | त–– , ––– ‖

‖ त्रऽत , तत– | ––– , ततत | त्रऽत , तत– | ––– , ततत |

| त्रऽत , तत– | ––– , ततत | त्रत– , त्रत– | त–– , –––:‖

‖ त्रऽऽ , ऽतत | त–त्र , त–त्र | त्रऽऽ , ऽतत | त–त्र , त–– |

| त्रत– , त्रत– | तत– , तत– | त्रत– , त्रत– | ततत , त––:‖

‖ ततत , ततत | त्रऽऽ , ऽऽऽ | तत– , तत– | थ्र–– , थ्र–– |

| त–– , ततत | त–– , ततत | त्रऽऽ , तत– | त–– , –––:‖

आनक **पाञ्चजन्य** केरवा-१२०

||ॐ|| त्र ऽत | त्र ऽत | त त्र | त – ||

|| तत –त | त्र तत | त–तत तत | त्र ऽ |

| तत –त | त्र तत | त–तत तत | त – :||

|| त्र ऽ | तत त | त्र ऽ | तत्र त |

| त्र ऽ | तत त | तत तत्र | त – :||

|| तत–त तत | त्र तत | तत्र तत | –त –त |

| तत–त तत | त्र तत | त–तत तत्र | त – :||

|| त––त तत | त्र ऽ | त––त तत | तत्र त |

| त––त तत | त्र ऽ | त––त तत्र | त – :||

|| त्र ऽ | ऽ ऽ | तत तत्र | तत्र त |

| त्र ऽ ऽ ऽ | त त––त्र | त – :||

आनक **भूप** केरवा-१२०

‖ॐ‖ थ त्र | तत तत्र | तत्र तत | थत थत |
| थ त्र | तत तत्र | तत्र तत | त्र त ः‖
‖ त्र तत | त्र तत | त्र तत | तततत तततत |
| त––त तत | तत्र तत | –त तत | त्र त ः‖
‖ त्र त | ++ + | त्र त | तत त |
| त्र त | ++ + | त्र s | त – ः‖

आनक **केदार** केरवा-१२०

‖ॐ‖ तत्र तततत | तत्र तततत | त त | तततत तततत |
| तत्र तततत | तत्र तततत | त त | तततत त ः‖
‖ तत तततत | तत तततत | तत्र तत | त्र s |
| तत तततत | तत तततत | तत्र तत | त्र त ः‖
‖ तत्र त | तत्र त | तततत तततत | त त्र |
| तत्र त | तत्र त | तततत तततत | त्र त ः‖

आनक    **मीरा**    खेमटा-३६०

‖ॐ‖ त–त , त–– | त–त , त–– | त्रऽऽ , त–त | त्रऽऽ , ऽऽऽ ‖

‖ त–– , त–– | त–– , त–– | त–त , त–त | त्रऽऽ , ऽऽऽ |

| त–– , त–– | त–– , त–– | त्रऽऽ , त–त | त–– , –––:‖

‖ ततत , त–त | त–– , त–– | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–– , त–त |

| ततत , त–त | त–– , त–– | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–– , त–त |

| ततत , त–त | त–– , त–– | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–– , त–त |

| त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–– , त–त | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–– , ––– ‖

‖ थ्र–– , थ्र–– | ततत , त–– | थ्र–– , थ्र–– | त्रऽऽ , त–– |

| थ्र–– , थ्र–– | ततत , त–– | त–त , त–त | त–– , –––:‖

आनक

# तिलककामोद

केरवा-१२०

||ॐ|| त्र ऽ | तत तत | त त्र | त – ||

|| तत तत | तत्र तत | तत तत | तत्र तत |

| तत तत | तत्र तत | त्र ऽ | त – :||

|| तत्र तत | त्र तत | तत्र तत | तत्र तत्र |

| तत्र तत | त्र तत | त्र ऽ | त – :||

|| त्र ततत– | त्र ततत– | त्र ततत– | तत ततत– |

| त्र ततत– | त्र ततत– | तत तत्र | त – :||

|| त+ +त्र | त+ +त्र | त+ ++ | ++ +त्र |

| त+ +त्र | त+ + | त–तत त | त्र त |

| त+ +त्र | त+ +त्र | त+ ++ | ++ +त्र |

| त+ +त्र | त+ + | त्र ऽ | त – :||

## आनक — तिलंग — केरवा-१२०

‖ॐ‖ तत त्र | तत त्र | त त | त – ‖

‖ तत त्र | तत त्र | तत तत | त–तत त |

| तत त्र | तत त्र | तत तत | त्र त :‖

‖ तत्र तत | तत्र तत | त्र तत | तत तत |

| तत्र तत | तत्र तत | त्र ऽ | तत्र त :‖

‖ त्र ऽ | त तत | त्र ऽ | त तत |

| तत तत | त तत | तत्र तत्र | त – :‖

## आनक — पहाड़ी — केरवा-१२०

‖ॐ‖ तत त | तत्र त | –त त्र | त त ‖

‖ तत्र त | तत त | तत्र त | तत तततत |

| तत्र त | तत तत |१ त त | त त्र :‖

|२ त त्र | त – ‖

‖ त्रत त्रत | तत त | त्र ततत– | तत्र त |

| त्र ततत– | त त्र | त त्र |१ तत्र त :‖

|२ त – ‖

‖ –त तत | तत्र त | –त –त | –त्र तत |

| तत्र त | –त –त |¹ त्र ऽ | ऽ त :‖

|² त्र ऽ | तत्र तत्र ‖

**आनक** **शिवरंजनी** **केरवा-१२०**

‖ॐ‖ त्र ऽ | तत तत | त्र ऽ | तत तत |

| त्र ऽ | तत तत | त्र ऽ | त – :‖

‖ –त्र तत | –त तत | –त्र तत | –त तत |

| –त्र तत | –त तत | त्र ऽ | त – :‖

‖ तत –त | तत –त | तत –त | तत त्र |

| तत –त | तत –त | तत –त | त्र तत्र :‖

‖ त त | तत्र त | तत्र तत्र | तत तत |

| त त | तत्र त | तत्र तत्र |¹ त –त्र :‖

|² त – ‖

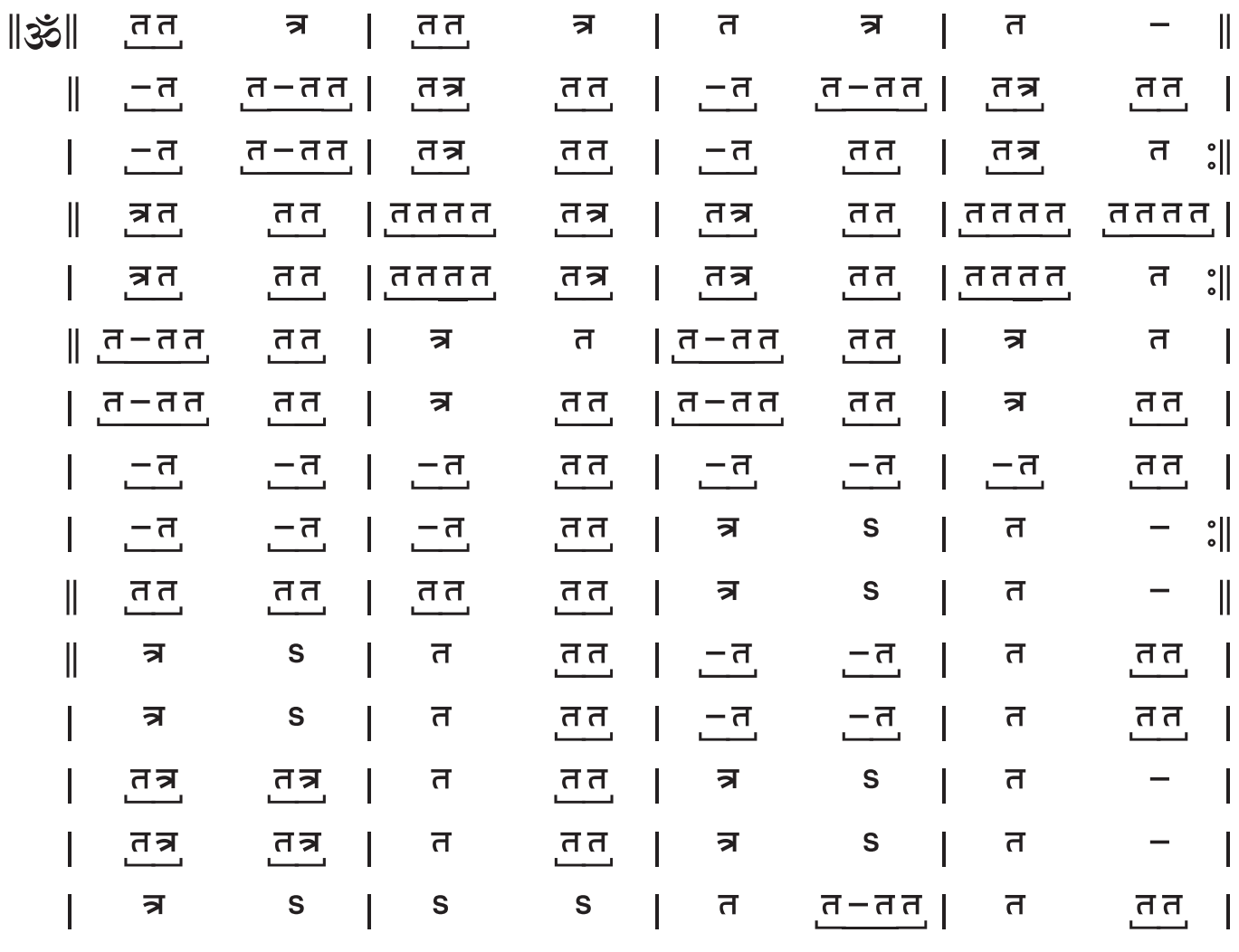

आनक — **दुर्गा** — केरवा-१२०

‖ॐ‖ तत त्र | तत त्र | त त्र | त – ‖

‖ –त त–तत | तत्र तत | –त त–तत | तत्र तत |

| –त त–तत | तत्र तत | –त तत | तत्र त :‖

‖ त्रत तत | तततत तत्र | तत्र तत | तततत तततत |

| त्रत तत | तततत तत्र | तत्र तत | तततत त :‖

‖ त–तत तत | त्र त | त–तत तत | त्र त |

| त–तत तत | त्र तत | त–तत तत | त्र तत |

| –त –त | –त तत | –त –त | –त तत |

| –त –त | –त तत | त्र ऽ | त – :‖

‖ तत तत | तत तत | त्र ऽ | त – ‖

‖ त्र ऽ | त तत | –त –त | त तत |

| त्र ऽ | त तत | –त –त | त तत |

| तत्र तत्र | त तत | त्र ऽ | त – |

| तत्र तत्र | त तत | त्र ऽ | त – |

| त्र ऽ | ऽ ऽ | त त–तत | त तत |

| त्र S | S S | त त–तत | त तत |

| –त –त | त्र तत | –त –त | त्र तत |

| त्र S | S S | त त–तत | त – :||

**आनक** **वलचि** **केरवा-१२०**

||ॐ|| थत थत | त्रत त | तत तत | तत्र त |

| –त –त | –त तत | त–तत त–तत |[१] त्रत त :||

|[१] त – ||

|| तत ततत– | तत ततत– | तत ततत– | त्रत त |

| त्र त–तत | त्र त–तत | ततत– ततत– | त्रत त :||

|| त––त तत | तत्र त | त––त तत | त्र त |

| त्र S | तततत त | तत्र तत |[१] ततत– त :||

|[२] त्र त ||

‖ॐ‖ ततत , ततत | त–त , तत– | ततत , ततत | त–त , तत– |

| ततत , ततत | त–त , तत– | त्रss , sss | त–त्र , त–– ‖

‖ त–त , ततत्र | त–त , ततत्र | ततत , ततत | त्रss , sss |

| त–त , ततत्र | त–त , ततत्र | ततत , ततत | त्रss , त––ः‖

‖ त्रss , sत– | त्रss , sत– | त्रss , sss | त–त , त–त |

| त्रss , sत– | त्रss , sत– | त्रss , sss | sss , त––ः‖

‖ त–त , ततत | त–त , त–त्र | त–त , ततत | त्रss , sss |

| त–त , ततत | त–त , त–त्र | त–त , ततत | त्रss , त––ः‖

‖ त्रss , ततत | त–– , ततत | ततत , ततत | त–– , ततत |

| त्रss , ततत | त–– , ततत | ततत , ततत | त–त्र , त––ः‖

‖ त–त , तत– | त–– , ततत | ततत , ततत | त–– , त्रss |

| त–त , तत– | त–– , ततत | ततत , ततत | त–त्र , त–– ‖

‖ त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–त , तत– | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–त , तत– |

| त–त , तत– | त–त , तत्रऽ | त–त , तत– | त्रऽऽ , त–– |

| त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–त्र , त–– | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–त्र , त–– |

| त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–त्र , त–– | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–त्र , त–– |

| त–त , तत– | त–त , तत– | त–– , तत– | त–– , त्रऽऽ |

| त–त , तत– | त–त , तत– | त–– , तत– | त–– , –––:‖

आनक **सुरभि** केरवा-१२०

‖ॐ‖ त––त तत | त–तत तत | त त्र | त त्र |

| त––त तत | त–तत तत | त्र ऽ | त – :‖

‖ त त | तततत त्र | त त | तततत त्र |

| त––त तत | ––तत तत | ––तत तत | त – :‖

‖ त––त तत | –त तत | तत्र तत्र | –त्र तत |

| त––त तत | –त तत | तत्र तत्र | त – :‖

आनक　　　　**हंसध्वनि**　　　　खेमटा-३६०

‖ॐ‖ त–– , ––– | त–– , ––– | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–– , त–– ‖

‖ त–त , त–त | त–त , ततत | त–त , त–त | त–त , ततत |

| त–त , त–त | त–त , ततत | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–– , त––:‖

‖ ततत , ततत | ततत , त्रऽऽ | ततत , ततत | त–– , त्रऽऽ |

| ततत , ततत | ततत , त्रऽऽ | ततत , ततत | त्रऽऽ , त––:‖

‖ त्रऽऽ , ऽऽऽ | ततत , ततत | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–– , ततत |

| त्रऽऽ , ऽऽऽ | ततत , ततत | त्रऽऽ , ऽऽऽ | ततत , त––:‖

‖ त–– , त–– | ततत , ततत | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–– , ––– |

| त–– , त–– | ततत , ततत | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–– , ––– |

| त–– , त–– | ततत , ततत | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–– , ––– |

| त–त , त–त | त–त , त–त | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–– , –––:‖

आनक **हंसवाहिनी** केरवा-१२०

‖ॐ‖ तत –त | –त तत | तत्र तत | ¹ त्र ऽ :‖

| ² त – ‖

‖ –त –त | –त ततत– | तत्र तत्र | त – :‖

‖ थत थत | तत्र तत्र | तत तत | त्र त :‖

‖ तत ततत– | त्रत तत | त्र ऽ | त – :‖

‖ ततत– ततत– | तत तत | त्र तत | त त :‖

‖ –त्र तत | –त तत | –त्र तत | त – :‖

‖ तत त्र | त तत | त्रत त्रत | त तत :‖

‖ तत ततत– | त्रत तत | त्र ऽ | त – :‖

आनक **हररंजनी** खेमटा-३६०

‖ॐ‖ त–त , ततत | त–त्र , त–त्र | त–त , त–त | त–त्र , त–त्र |

| त–त , ततत | त–त्र , त–त्र | त–त , त–त | त्रSS , त––:‖

‖ त–त , त–त | त–त्र , ततत | त–त , त–त | ततत , त्रSS |

| त–त , त–त | त–त्र , ततत | त–त , त–त | त्रSS , त––:‖

‖ त–त , त–त | त्रSS , SSS | त–त , त–त | त–त्र , त–– |

| त–त , त–त | त्रSS , SSS | त–त , त–त | त–त्र , त–– |

| ततत , त्रSS | ततत , त्रSS | त–त , त–त | त–त्र , त–– |

| ततत , ततत | त्रSS , SSS | ततत , ततत | त–त्र , त–– ‖

‖ त–त , त–त | त्रSS , SSS | त–त , त–त | त–त्र , त–– |

| त–त , त–त | त्रSS , SSS | त–त , त–त | त–त्र , त–– |

| ततत , त्रSS | ततत , त्रSS | त–त , त–त | त–त्र , त–– |

| त–त , ततत | ततत , ततत | त–त्र , त–त्र | त–त्र , त–– ‖

आनक　　　　　　**शरावती**　　　　　　केरवा-१२०

‖ॐ‖ त त | त तत | तत्र तत | त –त्र :‖

‖ त+ +त्र | त+ +त्र | त+ +त्र |१ त –त्र :‖

|२ त – ‖

‖ तत तत्र | तत तत्र | तत –त | त + |

| त्र ऽ | त + | त्र ऽ | त – :‖

‖ तत तत | त्र तत | तत तत | त्र त :‖

‖ त्र ऽ | ऽ ऽ | तत तत्र | त – :‖

‖ तत तत्र | तत तत्र | तत –त | त + |

| त्र ऽ | त + | त्र ऽ | त – :‖

आनक | देशकार | केरवा-१२०

| | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ॥ॐ॥ | तत | तत | । | तत्र | तत | । | तत | तत | । | तत्र | तत | । |
| । | तत | तत | । | तत्र | तत | । | तत्र | तत्र | । | त | – | :॥ |
| ॥ | त्र | तत | । | तत | तत | । | त्र | तत | । | तत | तत | । |
| । | त्र | तत | । | तत | तत | । | त्र | ऽ | । | त | – | :॥ |
| ॥ | तत | त | । | तत | तत्र | । | तत | त | । | त | त्र | । |
| । | तत | त | । | तत | तत्र | । | त | त | । | त | – | :॥ |
| ॥ | त––त | तत्र | । | तत | तत | । | त––त | तत्र | । | तत | तत | । |
| । | त | त्र | । | तत | तत | । | तत्र | तत्र | । | त | त्र | । |
| । | तत | तत्र | । | तत | त्र | । | तत | तत्र | । | तत | त्र | । |
| । | तत | तत्र | । | तत | त | । | त्र | ऽ | । | त | – | :॥ |

‖ॐ‖ त–तत तत | तत तत | त–तत तत | तत तत |

| त–तत तत | तत तत | त–तत तत्र | त – ‖

‖ तत तत्र | तत तत्र | तत्र तत | त्र तत्र |

| तत तत्र | तत तत्र | तत्र तत | त्र s |

| तत तत्र | तत तत्र | तत्र तत | त्र तत्र |

| तत तत्र | तत तत्र | तत्र तत | त्र त :‖

‖ त्र s | तत तत | त्र s | तत तत |

| त्र s | तत तत | त्र s | तत तत |

| तत्र तत | तत तत्र | तत्र तत | तत तत्र |

| तत्र st | तत्र st | त्र s | त – :‖

आनक **कल्याणी** खेमटा-३६०

‖ॐ‖ त्रSS , त–त | ततत , त्रSS | त–– , त्रSS | त–– , ––– ‖

‖ ततत , त्रSS | ततत , त्रSS | त–त्र , त–त्र | त–त्र , त–त्र |

| ततत , त्रSS | ततत , त्रSS | त–त्र , त–त्र | त–त्र , त––:‖

‖ ततत , त–त्र | ततत , त–त्र | ततत , ततत | ततत , त–त्र |

| ततत , त–त्र | ततत , त–त्र | ततत , ततत | त्रSS , त––:‖

‖ ततत , त–– | ततत , त–– | त–त , त–त | त्रSS , SSS |

| ततत , त–– | ततत , त–– | त–त , त–त |१ त्रSS , त––:‖

|२ त–– , ––त्र |

| त–– , ––त्र | त–– , ––त्र | त–– , ––त्र | त–– , ––– ‖

‖ॐ‖ त्र तत | त्र त–तत | त्र तत | त्र त–तत |

| त्र त–तत | तत त्र | तत त–तत | त – ः‖

‖ त्र s | तत त | त्र s | तत त |

| त्र s | तत त | त्र s | त – ः‖

‖ त–तत तत्र | त–तत तत्र | त–तत तत | त्र s |

| त्र त–तत | तत त्र | तत त–तत | त – ः‖

‖ त्र s | तत –त | त्र तत | –त तत |

| त्र s | तत –त | तत –त | तत –त |

| तत त | त्र s | त त्र | s त |

| तत –त | तत त | त्र s | त – ः‖

आनक | **शंकरा** | केरवा-१२०

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ‖ॐ‖ | त–तत | तत | तत | तत | त्र | ऽ | त | – | ‖ |
| ‖ | –त | –त | –त | तत | –त | –त | –त्र | तत | । |
| । | –त | –त | –त | तत | –त | तत | त्र | त | :‖ |
| ‖ | त––त | तत्र | त––त | त्र | त––त | तत्र | त––त | त्र | । |
| । | त–तत | तत्र | त––त | त्र | त––त | तत्र | त | त्र | :‖ |
| ‖ | तत्र | तत्र | तत | त | तत्र | तत्र | ऽ | ऽ | । |
| । | तत्र | तत्र | तत | त | तत्र | तत्र | ऽ | ऽ | । |
| । | तत्र | तत–त | तत्र | तततत | तत–त | तत | तत | त्र | । |
| । | तत्र | तत–त | तत्र | तततत | १ तत्र | तततत | त्र | त | :‖ |
| ‖२ | तत्र | तततत | त | तत्र | तततत | त | तत्र | तततत | ‖ |
| ‖ | त–तत | तत | त–तत | तत | त्र | तत | त्र | तत | । |
| । | त–तत | तत | त–तत | तत | त्र | तत | त्र | त | :‖ |
| ‖ | –त | –त | –त | तत | –त | –त | –त | तत | । |
| । | त–तत | त | त–तत | त | त्र | ऽ | त | तत | । |
| । | तततत | त्र | तततत | त्र | तततत | तततत | त | त्र | । |
| । | त | त्र | त–तत | तत्र | त–तत | तत्र | त | – | :‖ |

**आनक** **राजश्री** **केरवा-१२०**

||ॐ|| त––त तत | तत तत्र | तत त्र | त – |

| त––त तत | तत तत्र | त त्र | त – :||

|| त––त तत | तत –त | तत तत्र | त – |

| त––त तत | तत –त | तत त्र | त – :||

|| त–तत तत | तत तत्र | तत त्र | त – |

| त–तत तत | तत तत्र | तत तततत | त – :||

|| तत –त | तत तत्र | तत तततत | त – |

| तत –त | तत तत्र | तत्र तत्र | त – :||

|| त्र S | S S | त––त त | त्र त |

| त्र S | S S | तत्र तत्र | तत्र त |

| त्र S | S S | त––त त | त्र त |

| त्र S | S S | तत्र तत्र | तत्र तत्र |

| तत तत | तत तत्र | तत तत | तत तत्र |

| तत तत्र | तत तत्र | तत त–तत | त – :||

आनक    **खमाज**    खेमटा-३६० केरवा-१२०

‖ॐ‖ ततत , त–त | त–त , त–त | त–त , ततत | त–– , ––– ‖

‖ त–त , त–त | ततत , त–त | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–त , त–त |

| त–त , त–त | ततत , त–त | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–– , –––:‖

‖ त–त , त–त्र | त–त , ततत | त–त , त–त्र | त–त , ततत |

| त–त , त–त्र | त–त , ततत | त्रऽऽ , ऽऽऽ |१ त–– , ततत :‖

|२ त–– , ––– ‖

‖ ततत , ततत | ततत , त्रऽऽ | ततत , ततत | त–– , त्रऽऽ |

| ततत , ततत | ततत , त्रऽऽ | त–– , त्त–– | त–– , –––:‖

‖ त्र ऽ | ऽ ऽ | त–तत तत | तत त |

| त्र ऽ | ऽ ऽ | त–तत तत | तत त |

| त्र ऽ | ऽ ऽ | त–तत तत | तत त |

| त्र ऽ | ऽ ऽ | त–तत तत | तत त |

| त–तत तत | त–तत तत | त्र तत | त–तत तत |

| त–तत तत | त–तत तत | त्र तत | त–तत तत ‖

‖ तत्र तत | तत्र तत | तत्र तत | त्र ऽ |

| तत्र तत | तत्र तत | तत्र तत | त्र त :‖

आनक **कैरलि** केरवा-१२०

‖ॐ‖ त त्र | ऽ ऽ | तत्र तत्र | त त |

| त्र ऽ | ऽ ऽ | तत्र तत्र | त – :‖

‖ त ++ | त ++ | त ++ | त्र ऽ |

| त ++ | त ++ | त्र ऽ | त – :‖

‖ त्र तत | त्र तत | –त त | –त त |

| त्र तत | त्र तत | त त्र | त – :‖

‖ तत्र ऽत | तत्र ऽत | तत्र ऽत | तत त |

| तत्र ऽत | तत्र ऽत | तत –त | त – :‖

आनक　　　　　　　　**बदरी**　　　　　　　　खेमटा-३६० केरवा-१२०

‖ॐ‖ त–त , त–त | त–त्र , ततत | त–– , त्रऽऽ | त–– , ––– ‖

‖ त्रऽऽ , ततत | त्रऽऽ , ततत | त–त , त–त | त–– , ततत |

| त्रऽऽ , ततत | त्रऽऽ , ततत | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–– , –––:‖

‖ त–त्र , त–त्र | त–– , त्रऽऽ | त–त्र , त–त्र | त–– , ततत |

| त–त्र , त–त्र | त–– , त्रऽऽ | त–त्र , त–त्र | त–– , –––:‖

‖ त्रऽऽ , ततत | त–– , त–– | त–तत तत | त – ‖

‖ तत्र तत | तत तत | तत्र तत्र | त तततत |

| तत्र तत | तत तत | तत्र तत्र | त – :‖

‖ त्र ऽ | त तत | तत त––त | त – |

| त्र ऽ | त तत | तत –त | त – |

| –त –त | –त तत | –त –त | –त तत |

| तत तत्र | त –त | तत तत्र | त तत |

| त्र ऽ | त तत | तत ततत– | त – |

| त्र ऽ | त तत | त्र ऽ | त – |

| –त –त | –त तत | –त –त | –त तत |

| –त तत | –त तत | त्र ऽ | त – :‖

## आनक बंगश्री केरवा-१२०

‖ॐ‖ त्र ऽ | ऽ तत | त्र ऽ | ऽ तत |

| त्र ऽ | त – | तत –त | त्र त ‖

‖ तत्र तत | –त तत | त––त तत | तत्र तत |

| तत्र तत | –त तत | त –त्र | त – :‖

‖ तत्र तत | तत्र तत | त––त तत | त्र ऽ |

| तत्र तत | तत्र तत | त––त तत | त – :‖

# केकावली



| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ‖ॐ‖ | त्र | तत | तत्र | तत | त−−त | तत | तततत | तत | । |
| । | त्र | तत | तत्र | तत | त्र | तत्र | त | − | :‖ |
| ‖ | त्र | तत | तत्र | तत | −त | तत | −त | तत | । |
| । | त्र | तत | तत्र | तत | त्र | ऽ | त | − | :‖ |
| ‖ | −त | −त | −त | तत | −त | −त | −त्र | तत | । |
| । | −त | −त | −त | तत | −त | −त | −त्र | तत | । |
| । | −त | −त | −त | तत | −त | −त | −त्र | तत | । |
| । | −त्र | तत | −त्र | तत | त्र | ऽ | त | − | :‖ |
| ‖ | त−तत | तत | तत | त्र | तत | तत | त्र | ऽ | । |
| । | त−तत | तत | तत | त | त | त−−त | त | − | ‖ |
| ‖ | त्र | ऽ | तत | तत | त्र | ऽ | तत | तत | । |
| । | −त | −त | −त | −त | −त | तत | −त | तत | । |
| । | त्र | ऽ | तत | तत | त्र | ऽ | तत | तत | । |

| −त −त | −त तत | त्र ऽ | त − |

| −त −त | तत − | −त −त | तत − |

| त्र ऽ | तत तत | त्र ऽ | तत तत |

| −त −त | −त −त | त्र ऽ | त तत |

| तत्र तत्र | तत्र तत्र | ऽ ऽ | त − :||

**आनक** **जननी** **केरवा-१२०**

||ॐ|| त्र तत | तत −त | त्र ऽ | त − ||

|| तत −त | त त्र | तत −त | त त्र |

| तत −त | त ++ | त्र ऽ | त − :||

|| तत −त | त्र तत | त तत | त्र ऽ |

| तत −त | त्र तत | तत त्र | त त :||

|| तत −त | त्र तत | त्र तत | त्र त |

| तत −त | त्र तत | त्र ऽ | त − :||

आनक　　　　　　　　**हरिकांबोजी**　　　　　　　　केरवा-१२०

||ॐ|| त त | त–तत तत | त त | त्र तत्र |

| त त | त–तत तत | त्र ऽ | त – :||

|| त–तत तत | तत तत | तत्र ऽ | तत तत |

| त–तत तत | तत तत | तत्र ऽ | त – :||

|| तत्र ऽत | तत्र ऽत | तत्र ऽत | त त्रत |

| तत्र ऽत | तत्र ऽत | तत्र तत्र | त – :||

|| –त –त | –त तत | –त –त | त–तत तत |

| –त –त | –त तत | –त –त | त–तत तत |

| –त –त | –त तत | –त –त | त–तत तत |

| तत – | तत – |¹ तत तत | तत्र त :||

|² तत्र तत्र | त – ||

आनक

# गौडमल्हार

खेमटा-३६० केरवा-१२०

॥ॐ॥ त–त , त–त | त–त , ततत | त्रऽऽ , त–त | त–– , ––– ॥

॥ त–त , त–त | ततत , त–त | त–त , त–त | ततत , त्रऽऽ |

| त–त , त–त | ततत , त–त | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–– , –––:॥

॥ त–त , त–– | त्रऽऽ , ततत | त–त , त–– | त्रऽऽ , ऽऽऽ |

| त–त , त–– | त्रऽऽ , ततत | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–– , –––:॥

॥ –त तत | त –त्र | तत्र तत्र | त – |

| –त तत | –त तत | तत्र तत्र | त – ॥

॥ तत्र तत्र | तत्र तत | तत्र तत्र | तत्र तततत |

| तत्र तत्र | तत्र तत | त्र ऽ | त – :॥

॥ त्र ऽ | तत्र तत | त्र ऽ | तत्र तत |

| त्र ऽ | तत्र तत | –त्र तत | –त्र तत |

| –त्र तत | –त तत | –त्र तत | –त तत |

| –त तत | –त तत |[1] त्र ऽ | त – :॥

॥[2] त्र ऽ | त –त्र |

| त –त्र | त –त | त्र ऽ | त – ॥

‖ॐ‖ ततत , ततत | त्रऽऽ , ऽऽत | त्रऽऽ , ऽऽत | त–– , ––– ‖

‖ त–त , त्र–त्र | ततत , त्र–त्र | ततत , त्र–त्र | त–त , त–त |

| त–त , त्र–त्र | ततत , त्र–त्र | ततत , त्रऽऽ | त–– , –––:‖

‖ त–त्र , त–– | त्रऽऽ , त–– | त–त्र , ऽऽऽ | त–त , त–त |

| त–त्र , त–– | त्रऽऽ , त–– | त–त्र , ऽऽऽ |[1] त–– , –––:‖

|[2] त–– , ––त्र ‖

‖ त–– , ––त्र | त–– , ––त्र | त–– , ततत | ततत , त–– |

| थ्र–– , त–– | थ्र–– , त–– | थ्र–– , त–– | थ्र–– , त–त्र |

| त–– , ––त्र | त–– , ––त्र | त–– , ततत | ततत , त–त |

| त–त्र , त–त्र | त–त , त–त | त्रऽऽ , ऽऽऽ |[1] त–– , ––त्र:‖

|[2] त–– , ––– ‖

‖ त–त , त–त्र | त–त , त–त्र | त्रऽऽ , ऽऽऽ | ––– , ––– |

| त्रऽऽ , ऽऽत | ––– , ––– | त्रऽऽ , ऽऽत | ––– , ––– |

| त्रऽऽ , ऽऽत | ––– , ––– | त्रऽऽ , ऽऽत | ––– , ––– |

| त्रऽऽ , ऽऽत | ––– , ––– | त्रऽऽ , त–त | त–– , –––:‖

‖ॐ‖ तत तत | तत्र तत्र | तत तत | तत्र तत्र |
| त्र तत्र | s त तत | त्र तत | त्र तत |
| तत तत | तत्र तत्र | थत थत | थत त :‖
‖ त्र तत | त्र तत | त तत | तत त |
| त त | त तत | त त्र | s त :‖
‖ थ्र तत | थ्र तत | तत तत | त्र तत |
| तत्र s त | –त्र तत | थ थ | थ थ :‖
‖ तत तत | तत त्र | तत तत | तत त्र |
| तत तत | तत त्र | तत त्र | त – :‖
‖ तत्र तत्र | तत्र तत्र | तत्र s | त – ‖

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ‖ॐ‖ | त–तत | तत | तत | तत | त | त्र | त | – ‖ |
| ‖ | –त | –त | –त | तत | –त | –त | तत्र | तत |
| | –त | –त | –त | तत | –त | –त | तत्र | तत |
| | –त | –त | –त | तत | –त | –त | तत्र | तत |
| | –त | –त | –त | तत | त्र | s | त | – :‖ |
| ‖ | तत्र | तत | तत–त | तत | तत्र | तत्र | तत | त्र |
| | तत्र | तत | तत–त | तत | त–तत | त–तत | तत | तत |
| | तत्र | तत | तत–त | तत | तत्र | तत्र | तत | त्र |
| | तत्र | तत | तत–त | तत | तत्र | तत्र | त | – :‖ |
| ‖ | –त | –त | –त | तत | –त | –त | तत्र | तत |
| | –त | –त | –त | तत | –त | –त | तत्र | तत |
| | –त | –त | –त | तत | –त | –त | तत्र | तत |
| | १ –त | –त | –त | तत | त्र | s | त | – :‖ |

| २ त्र ऽ | त त्र | ऽ त | त्र ऽ ||

|| त तत | तत–त तत | तत–त तत्र | तत–त तत |

| त̂त̂ त्र | त̂त̂ त्र | तत्र तत्र | त – ||

|| –त्र तत | –त –त | त̂त̂ त्र | त – |

| –त्र तत | –त –त | त̂त̂ त्र | त – |

| –त्र तत | –त –त | त̂त̂ त्र | त – |

| –त्र तत | –त –त | त̂त̂ त्र | त – |

| तत तत | तत्र तत | तत तत | तत्र तत |

| तत्र तत्र | तत्र तत | त̂त̂ त्र | त – :||

आनक # धानी खेमटा-३६०

‖ॐ‖ त–त , त–त | त–त , त–त | त–त्र , त–त्र | त–– , ––– ‖

‖ त्रऽऽ , त–त | ततत , ततत | त–त्र , त–त्र | त्रऽऽ , त–त |

| त्रऽऽ , त–त | ततत , ततत | त–त्र , त–त्र | त–– , –––:‖

‖ त–त , त–त | त–त , त्रऽऽ | त–त , त–त | ततत , त्रऽऽ |

| त–त , त–त | त–त , त्रऽऽ | त–त , त–त | ततत , त––:‖

‖ त–त , त–त | त–त , त–त | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–– , ––– ‖

‖ त–त , त–त | त–त , त्रऽऽ | त–त , त–त | त–– , त्रऽऽ |

| त–त , त–त | त–त , त्रऽऽ | त–त्र , त–त्र | त–त्र , त–त्र |

| त–त , त–त | त–त , त्रऽऽ | त–त , त–त | त–त , त–– |

| त्रऽऽ , ततत | त्रऽऽ , ततत | ततत , ततत | त्रऽऽ , त––:‖

आनक **गुणवंत** केरवा-१२०

||ॐ|| तत तत | त–तत तत | तत तत | त–तत तत |

| तत तत | त–तत तत | त्र ऽ | त – ||

|| त्र ऽ | त – | तत्र तत्र | त – |

| त्र ऽ | त – | तत्र तत्र | त – |

| –त –त | त त्र | –त –त | त त्र |

| –त तत | –त तत | त्र ऽ | त – :||

|| त्र तत्र | तत तत्र | त्त त्त | – – |

| त्र तत्र | तत तत्र | त्त त्त | – – |

| त्र तत | त्र तत्र | त्र तत | त्र तत्र |

| –त –त | –त तत्र | –त –त | – – |

| त त्र | त त्र | त त्र | त त्र |

| –त तत | –त तत | –त तत | त त |

| तत्र तत्र | तत्र तत | तत्र तत्र | तत्र तत |

| –त –त | –त तत | त्र ऽ | त – :||

आनक　　　　　　　　**गणेश**　　　　　　　　खेमटा-३६०

‖ॐ‖ त–त , त–त | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–– , ततत | त–– , ––– ‖

‖ त–त्र , त–त | त–त्र , ततत | त–त्र , त–त | त–– , ततत |

| त–त्र , त–त | त–त्र , ततत | त–त्र , त–त | त–– , –––:‖

‖ ततत , त–त | ततत , त–त | ततत , त–त | त्रऽऽ , त–– |

| ततत , त–त | ततत , त–त | ततत , ततत | त्रऽऽ , त––:‖

‖ त–त्र , त–त | त–त्र , ततत | त–त्र , त–त | त–– , ततत |

| त–त्र , त–त | त–त्र , ततत | त–त्र , त–त | त–– , –––:‖

‖ त्रऽऽ , त–– | त्रऽऽ , तत्रत | तत्रत , तत्रत | तत्रत , त–त |

| त्रऽऽ , त–– | त्रऽऽ , तत्रत | तत्रत , तत्रत |१ त्रऽऽ , त––:‖

|२ त्रऽऽ , त–त्र ‖

‖ त–त्र , त–त्र | त–त्र , त–त्र | त–त्र , त–त्र | त–त्र , त–– |

| त–त्र , त–त्र | त–त्र , त–त्र | त–– , त–– | त–– , ––– ‖

‖ त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–त , त–त | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–त , त–त |

| त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–त , त–त | त–त्र , त–त्र | त–त , त–त |

| त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–त , त–त | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–त , त–त |

| त–त्र , त–त्र | त–– , त–त्र | त–त्र , त–त्र | त–– , ततत |

| त्रऽऽ , ततत | त्रऽऽ , ततत | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–– , ततत |

| त्रऽऽ , ततत | त्रऽऽ , ततत | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–– , ततत |

| त–त्र , त–त्र | त–– , त–त्र | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–– , ततत |

| त–त्र , त–त्र | त–त्र , त–त्र | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–– , –––:‖

आनक **गोवर्द्धन** खेमटा-३६०

‖ॐ‖ त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–त , त–त | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–– , ––– ‖

‖ त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–त , त–त | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–त , त–त |

| त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–त , त–त | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–– , –––:‖

‖ त्रऽऽ , त–त | त्रऽऽ , त–त | त्रऽऽ , त–त | त–त्र , त–– |

| त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–त , त–त | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–त्र , त––:‖

‖ त–त , त–– | त्रऽऽ , त–– | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–– , ––– |

| त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–त , त–त | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–– , –––:‖

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ‖ॐ‖ त्र | s | त | त्र | तत्र | तत | त | त्र |
| तततत– | तत | तत | तत | त्र | s | त | – ‖ |
| ‖ त | तत | त्र | s त | तत | तत | त्र | s |
| तततत– | तत | त्र | त | त्र | s | त | – :‖ |
| ‖ तत्र | त | तत्र | त | तत | तत | तत्र | त |
| तत्र | त | तत्र | तत | तततत– | – | १ त्रत | – :‖ |
| | | | | | | २ त्रत | –त्र ‖ |
| ‖ त | तत | त्र | s | त | त | थ्र | थ्र |
| तत | तत | तत्र | त | तततत– | तततत– | त्र | s |
| त | तत | त्र | s | त | त | थ्र | थ्र |
| १ त्र | s | तत | तत | त्र | s | त | –त्र :‖ |
| २ तततत– | तत | –त | तत | त्र | s | त | – ‖ |
| ‖ तत | –त | त | त | तत | –त | त्र | s |
| तत | –त | त | त | त्र | s | त | – ‖ |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ‖ त्र ऽत | ततत– –त्र | त त्र | ऽ त |
| त–तत तत | त्र तत | त त––त | त – |
| त्र ऽत | ततत– –त्र | त त्र | ऽ त |
| त्र ऽ | ऽ ऽ | ततत– त––त | त –त |
| त–तत त–तत | त्र ऽ | ततत– तत्र | त – |
| त–तत त–तत | त्र ऽ | त त्र | त – |
| तत तत | तत्र तत | तत त––त | त –त्र |
| तत तत | तत्र तत | त त––त | १ त –त :‖ |
| | | | २ त – ‖ |

आनक **विष्णुपदी** खेमटा-३६० केरवा-१२०

‖ॐ‖ त–त , त–त | त–त , त्रऽऽ | क्त̂–– , क्त̂–– | क्त̂–– , ––– ‖

‖ त–त , त्रऽऽ | त–त , त–त | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–त , त–त |

| त–त , त–त | त–त , त–त | क्त–– , क्त–– | क्त–– , त्रऽऽ |

| त–त , त्रऽऽ | त–त , त–त | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त–त , त–त |

| त–त , त–त | त–त , त–त | क्त̂–– , क्त̂–– | क्त̂–– , –––:‖

‖ त्रऽऽ , ततत | त–त , त्रऽऽ | ऽऽऽ , ऽऽऽ | त–त , त्रऽऽ |

| ऽऽऽ , ततत | त–त , त्रऽऽ | ऽऽऽ , ऽऽऽ | त–त , त्रऽऽ |

| ऽऽऽ , ऽऽऽ | ऽऽऽ , ऽऽऽ | ऽऽऽ , ऽऽऽ | ऽऽऽ , त–त |

| त–त , त–त | त–त , त–त | क्त̂–– , क्त̂–– | क्त̂–– , त्रऽऽ:‖

‖ ततत , त्रऽऽ | ततत , त्रऽऽ | त–त , त–त | त्रऽऽ , त–– |

| ततत , त्रऽऽ | ततत , त्रऽऽ | त–त , ––त | त–– , त–– |

| त त त , त्र ऽ ऽ | त त त , त्र ऽ ऽ | त त त , – – त | त – – , त – – |

| त – त , त – त | त – त , त – त | क्त̂ – – , क्त̂ – – | क्त̂ – – , – – त्र :‖

‖ त – त त  त्र | त – त त  त्र | त त त त  त त | त्र  ऽ त |

| त – त त  त + | + +  त + | + +  त्र | ऽ  त |

| त्र त  – | त्र त  – | त्र  ऽ | ऽ  ऽ |

| त – त , त – त | त – त , त – त | क्त̂ – – , क्त̂ – – | क्त̂ – – , – – – :‖

‖ त – त , त त त | त – त , त्र ऽ ऽ | त – त , त – त | त्र ऽ ऽ , ऽ त त |

| त त त , त्र ऽ ऽ | त त त , त – – | त – त , त्र ऽ ऽ | त – त , त – – |

| त्र ऽ ऽ , ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ , ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ , ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ , ऽ ऽ ऽ |

| त – त , त – त | त – त , त – त | क्त̂ – – , क्त̂ – – | क्त̂ – – , – – – :‖

आनक

# कालगति

खेमटा-३६०

‖ॐ‖ त–त , त्रऽऽ | त–त , त्रऽऽ | त–त , त–त | त्रऽऽ , त ‖

‖ त–त , त–त | त–त , त–त | त्रऽऽ , त–त | त––, ततत |

| त–त , त–त | त–त , त–त | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त––, –––:‖

‖ त–त , ततत | त्रऽऽ , ततत | त–त , ततत | त्रऽऽ , ततत |

| त–त , ततत | त्रऽऽ , ततत |[१] त्रऽऽ, ऽऽऽ | त––, –––:‖

|[२] त्रऽऽ , ऽऽऽ | त––, ततत ‖ त––, त–– | त–त , त–त |

| त–– , त–– | त्रऽऽ , ततत | त––, त–– | त–त , त–त |

| त्रऽऽ , ऽऽऽ | त––, ––– ‖ त्रऽऽ , ऽऽऽ | त––, ततत |

| त्रऽऽ , ऽऽऽ | त––, त–– | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त––, ततत |

| त्रऽऽ , ऽऽऽ | त––, त–– | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त––, ततत |

| त्रऽऽ , ऽऽऽ | त––, त–– | त्रऽऽ , ऽऽऽ | त––, ततत |

| त्रऽऽ , ऽऽऽ | त––, त–– | त–त , त–त | त–त , त्रऽऽ |

| त–त , त–त | त–त , त्रऽऽ | त–त , त–त | त–त , त–त |

|[१] त्रऽऽ , ऽऽऽ | त––, ततत:‖[२] त्रऽऽ, ऽऽऽ | त––, –––‖

आनक    **वन्देमातरम्**    केरवा-१२०

‖ॐ‖ त्र ऽ | ऽ ऽ | ऽ ऽ | त – ‖

‖ –त –त | –त तत | –त –त | तत तत ‖

‖ –त –त | –त तत | त्र ऽ | त – ‖

‖ त्र ऽ | त–तत तत | त्र ऽ | त–तत तत |

| तत्र तत | तत्र तत | त तत | तत्र त |

| त्र ऽ | तत –त | त्र ऽ | त – ‖

‖ –त –त | –त तत | त्र ऽ | त – ‖

‖ –त –त | –त तत | –त –त | ––तत तत |

| त्र ऽ | तत तत | –त्र तत | तत तत |

| –त –त | ––तत तत | त्र ऽ | तत तत |

| तत्र ऽत | त–तत तत | –त –त | ––तत तत |

| त्र ऽ | त तत | त्र ऽ | त तत |

| त्र ऽ | तत –त | त्र ऽ | त – ‖

‖ –त –त | –त तत | –त –त | तत तत ‖

‖ –त –त | –त तत | त्र ऽ | त – ‖

आनक

# माधवनित्या

केरवा-१२०

| | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ‖ॐ‖ | त––त | त––त | \| | त्र | ऽत | \| | त | –त | \| | त | – | ‖ |
| ‖ | थ | त्र | \| | ऽ | तततत | \| | त्र | त––त | \| | त | – | \| |
| \| | थ | त्र | \| | ऽ | तततत | \| | त्र | त––त | \| | त | – | \| |
| \| | थ | त्र | \| | ऽ | त––त | \| | त्र | ऽ | \| | त | – | :‖ |
| ‖ | त––त | तत | \| | –त | –त | \| | तत | –त | \| | त्र | ऽ | \| |
| \| | तत | –त | \| | –त | तत | \| | तत | तत | \| | त्र | ऽ | \| |
| \| | तत | त––त | \| | त्र | ऽत | \| | तत | तत | \| | त्र | ऽत | \| |
| \| | थ | त्र | \| | ऽ | त––त | \| | त्र | ऽ | \| | त | – | :‖ |
| ‖ | त्र | ऽ | \| | तत | –त | \| | तत | तत | \| | –त | –त | \| |
| \| | त्र | त | \| | –त | –त | \| | तत | तत | \| | –त | –त | \| |

| त्रत | त | −त | −त | तत | तत | −त | −त | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| थ | त्र | s | त−−त | त्र | s | त | − | :‖ |
| ‖ त्र | त | + | + | −त | −त | त्र | s | |
| s | त | + | + | −त | −त | त्र | s | |
| तत | त | त्र | s | त | −त्र | त | − | |
| तत | −त | त्र | s | तत | त्र | त | − | |
| थ | त्र | s | त−−त | त्र | s | त | − | |
| थ | त्र | s | त−−त | त्र | s | त | − | :‖ |
| ‖ थ | −त्र | त | −त | त्र | s | त | − | ‖ |

आनक **भीमपलास** केरवा-१२०

‖ॐ‖ त्र तत | त्र ऽ | तत तत्र | त – ‖

‖ त तत | त्र ऽ | त त्र | त तत |

| तत्र तत | त्र तत | त्र ऽ | त – :‖

‖ त्र ऽ | त तत | त्र ऽ | त तत |

| त्र ऽ | त तत | त्र ऽ | त – :‖

‖ त–तत तत | त्र ऽ | त त | त्र त |

| त–तत तत | त्र ऽ | त–तत तत | त – ‖

‖ त्र ऽ | त तत | त्र ऽ | त तत |

| त्र ऽ | त तत | त्र ऽ | त तत |

| त्र ऽ | त तत | त्र ऽ | त तत |

| तत –त | त्र तत | तत –त | त्र त |

| त–तत तत | –त तत | त–तत तत | त तत |

| त–तत तत | –त तत | त त––त | त – |

| –त्र तत | त्र त | –त्र तत | त्र त |

| –त्र तत | त्र तत | त्र ऽ |१ त –त :‖

|२ त – ‖

आनक **कावेरी** दादरा-१२०

‖ॐ‖ – त त | – त त | त तत त | त्र स त |

| त त्र त | त त्र त | त तत त्र | त – – ः‖

‖ त्र स स | त ततत | त्र स स | त ततत |

| तत्र तत्र त | तत्र तत्र त | त्र स स | त – – ः‖

आनक **वरदा** दादरा-१२०

‖ॐ‖ त्र स त | त ततत | त्र स त | त ततत |

| त त्र त | त ततत | त्र स स | त – – ः‖

‖ त ततत | त्र स त | त ततत | त्र स त |

| त ततत | त ततत | त्र स स | त – – ः‖

‖ त्र स ततत | त ततत | त त्र त | त – – |

| तत तत्र तत | त त त | त्र स स | त – – ः‖

आनक **निरंजन** दादरा -१२०

| | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ‖ॐ‖ | – | त | त | \| | – | त | त | \| | त्र | s | त | \| | त्र | त | त | \| |
| \| | – | त | त | \| | – | त | त | \| | त | त्र | त | \| | त्र | त | त | \| |
| \| | – | त | त | \| | – | त | त | \| | त्र | s | त | \| | त्र | त | त | \| |
| \| | – | त | त | \| | – | त | त | \| | त्र | s | त | \| | त | – | – | ः‖ |
| ‖ | त | त | त | \| | त्र | s | त | \| | – | त | त | \| | – | त | त | \| |
| \| | त | त | त | \| | त्र | s | त | \| | त | त्र | त | \| | त | – | – | ः‖ |
| ‖ | त्र | s | s | \| | s | s | त | \| | त्त | + | + | \| | त्त | + | + | \| |
| \| | त्र | s | s | \| | s | s | त | \| | त्त | + | + | \| | त्त | + | + | \| |
| \| | त्र | s | s | \| | s | s | त | \| | त्त | + | + | \| | त्त | + | + | \| |
| \| | त्र | s | s | \| | s | s | त | \| | त | त्र | त | \| | त | – | – | ः‖ |

## आनक — दत्तात्रेय — दादरा -१२०

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ‖ॐ‖ | – त त | – त त | त्र ऽ ऽ | त तत त | । |
| । | – त त | – त त | त्र ऽ ऽ | त तत त | । |
| । | – त त | – त त | त्र ऽ ऽ | त तत त | । |
| । | – त त | – त त | त्र ऽ ऽ | त – – | :‖ |
| ‖ | त्र ऽ ऽ | त त त | त तत तत | त त त | । |
| । | त्र ऽ ऽ | त त त | त तत तत | त तत त | । |
| । | त्र ऽ ऽ | त त त | त तत तत | त त त | । |
| । | तत त्र तत | तत त्र तत | तत त्र तत | त – – | :‖ |

## आनक — मलयप्रभा — दादरा -१८०

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ‖ॐ‖ | त त्र त | त्र ऽ ऽ | त त्र त | त तत त | । |
| । | त त त | त्र ऽ त | त त्र त | त – – | :‖ |
| ‖ | त त तत | त्र ऽ ऽ | त त त | त त्र त | । |
| । | त त तत | त्र ऽ ऽ | त त तत्र | त – – | :‖ |
| ‖ | तत्र तत्र तत | त – – | त्र ऽ तत | त – – | । |
| । | तत्र तत्र तत | त – – | त तत्र तत | त – – | :‖ |

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ‖ॐ‖ | – | त | त | \| | – | त | त | \| | – | त | त्र | \| | – | त | त्र | \| |
| \| | – | त | त | \| | – | त | त | \| | त्रत | त्रत | त्रत | \| | त्र | त | त | \| |
| \| | – | त | त | \| | – | त | त | \| | – | त | त्र | \| | – | त | त्र | \| |
| \| | – | त | त | \| | – | त | त | \| | त्र | s | s | \| | त | – | – | ः‖ |
| ‖ | – | त | त | \| | – | त | त | \| | – | त | तत | \| | – | त | त्र | \| |
| \| | – | त | त | \| | – | त | त | \| | त्र | s | s | \| | त | त | त | \| |
| \| | – | त | त | \| | – | त | त | \| | – | त | तत | \| | – | त | त्र | \| |
| \| | – | त | त | \| | – | त | त | \| | त्र | s | s | \| | त | – | – | ः‖ |

आनक

# वेलावली

दादरा -१२०

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ‖ॐ‖ | – त त | – त त | त त त | त त्र त | \| |
| \| | – त त | त्र ऽ त | त त्र त | त्र ऽ त | \| |
| \| | त त त | – त त | तत्र तत त | त त त | \| |
| \| | – त त | त त त | त्र ऽ ऽ | त – – | :‖ |
| ‖ | त्र ऽ त | – त त | त्र ऽ ऽ | त त्र त | \| |
| \| | त त त | – त त | – त त | – त त्र | \| |
| \| | – त त | – त त्र | त त त | – त त्र | \| |
| \| | – त त | त त त | त्र ऽ ऽ | त – – | :‖ |

आनक

# शिवराज:

दादरा -१२०

| | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ‖ॐ‖ | त–तत | तत | तत | त–तत | तत | तत | त–तत | तत | तत | त | – | – | ‖ |
| ‖ | – | त | त | – | त | त | त | तत | त | त | त | त | \| |
| \| | – | त | त | – | त | त | त | तत | त | त्र | ऽ | ऽ | \| |
| \| | त | त | त | – | त | त | त | तत | त | त | त | त | \| |
| \| | – | त | त | – | त | त | त्र | ऽ | ऽ | त | – | – | :‖ |
| ‖ | त्र | तत | तत्र | त | त | त | त | तत | तत्र | त | त | त | \| |
| \| | – | त | त | – | त | त | तत्र | तत्र | तत्र | त | त | त | \| |
| \| | त्र | तत | तत्र | त | त | त | त | तत | तत्र | त | त | त | \| |
| \| | – | त | त | – | त | त | तत्र | तत्र | तत्र | त | – | – | :‖ |
| ‖ | त | त | त | – | त | त्र | त | त | त | – | त | त्र | \| |
| \| | त | त | त | – | त | त्र | त | त | त | तत | तत | त्र | \| |
| \| | त | त | त | – | त | त्र | त | त | त | – | त | त्र | \| |
| \| | त | त | त | – | त | त्र | त | त्र | ऽ | त | – | – | :‖ |

‖ त ततत ततत | त त त्र | त ततत ततत | त त त्र |

| त ततत ततत | त त त्र | त ततत ततत | त्र s s |

| त ततत ततत | त त त्र | त ततत ततत | त त त्र |

| त–तत ततत ततत | त–तत ततत ततत | त–तत ततत ततत | त – – ः‖

आनक

## कलिंगड़ा

दादरा -१२०

‖ॐ‖ – त त | – त त | – त त | त ततत त |

| – त त | – त त | – त त | त ततत त |

| – त त | – त त | – त त | त ततत त |

| – त त | – त त | त s s | त – – ः‖

‖ त त्र त | त ततत त | त त्र त | त ततत त |

| त – – | त ततत त | त – – | त ततत त |

| त त्र त | त ततत त | त त्र त | त ततत त |

| – त त | – त त | त s s | त – – ः‖

आनक

# प्रशांति

दादरा -१२०

| | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ‖ॐ‖ | – | त | त | – | त | त | – | तत | त | – | त | त | \| |
| \| | – | त | त | – | त | त | – | तत | त | त्र | ऽ | ऽ | \| |
| \| | – | त | त | – | त | त | – | तत | त | – | त | त | \| |
| \| | – | त | त | – | त | त | त्र | ऽ | ऽ | त | – | – | :‖ |
| ‖ | – | त | त | त्र | त | त | – | त | त | त | त | त | \| |
| \| | – | त | त | त्र | त | त | – | त | त | त | त | त | \| |
| \| | – | त | त | त्र | त | त | – | त | त | त | त | त | \| |
| \| | – | त | त | त्र | त | त | त | त | त्र | त | – | – | :‖ |
| ‖ | – | त | त | – | त | त | – | त | त | त | त | त | \| |
| \| | तत्र | तत्र | तत्र | त | त | त | तत्र | तत्र | तत्र | त | त | त | \| |
| \| | – | त | त | – | त | त | – | त | त | त | त | त | \| |
| \| | तत्र | तत्र | तत्र | त | त | त | त्र | ऽ | ऽ | त | – | – | :‖ |

| | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ‖ॐ‖ | त | त | तत | \| | त | त | तत | \| | त्र | s | s | \| | त | – | – | ‖ |
| ‖ | – | त | त | \| | – | त | त | \| | – | त | त | \| | त्र | s | s | \| |
| \| | त | त | त | \| | – | त | त | \| | – | त | त | \| | त | तत | तत | \| |
| \| | – | त | त | \| | – | त | त | \| | – | त | त | \| | त्र | s | s | \| |
| \| | त | त | त | \| | – | त | त | \| | त–तत | तत | तत | \| | त | – | – | :‖ |
| ‖ | – | त | त | \| | त | तत | तत | \| | – | त | त | \| | त | तत | त | \| |
| \| | – | त | त | \| | त | तत | तत | \| | – | त | त | \| | त | त्र | त | \| |
| \| | – | त | त | \| | त | तत | तत | \| | – | त | त | \| | त | तत | त | \| |
| \| | – | त | त | \| | त | तत | तत | \| | त्र | s | s | \| | त | – | – | :‖ |
| ‖ | – | त | त | \| | – | त | त | \| | – | त | त | \| | त | तत | त | \| |
| \| | – | त | त | \| | – | त | त | \| | – | त | त | \| | त | त्र | s | \| |
| \| | त | त | त | \| | – | त | त | \| | – | त | त | \| | त | तत | त | \| |
| \| | त | त | तत | \| | त | त | तत | \| | त्र | s | s | \| | त | – | – | :‖ |

आनक **देवदत्त** दादरा -१२०

‖ॐ‖ त तत त | त तत त | त तत त्र | त – – ‖

‖ – त त | – त त | त्र ऽ ऽ | त तत त |

| – त त | – त त | त्र ऽ ऽ | त तत त |

| – त त | – त त | त्र ऽ ऽ | त तत त |

| – त त | – त त | त्र ऽ ऽ | त – – :‖

‖ त्र ऽ ऽ | त त त | त तत तत | त त त |

| त्र ऽ ऽ | त त त | त तत तत | त तत त |

| त्र ऽ ऽ | त त त | त तत तत | त त त |

| तत त्र तत | तत त्र तत | तत त्र तत | त – – :‖

‖ॐ‖ त त त | त्र s s | त त्र त | त्र s त |
| त्र s त | त – – | – त त | – त त |
| – त्र त | त त त | त्र s s | त त्र त |
| त्र s त | त्र s त | त्र s त | त – – :‖
‖ त तत्त त | त्र s त | त तत्त त | त्र s त |
| त्र s त | त तत्त तत्त | त त त | त्र s त |
| तत्र तत्र s | तत्र तत्र s | त त त | – त त |
| तत्र तत्र त | तत्र तत्र त | त त त | [१] त – – :‖
[२] त – त्र ‖
‖ त त्र s | त त तत्र | त त्र s | त – त |
| त त्र s | त त तत्र | त त्र s | त त्र s |
| त – त | – त त | त त्र त | त – त |
| त – त | – त त | त s s | [१] त – त्र :‖
[२] त – – ‖

आनक

# तुंगा

दादरा -१२०

‖ॐ‖ त त त | त्र ऽ त | त त त | त्र ऽ ऽ |

| त त त | – त त | त त त | त्र ऽ त :‖

‖ त्र त त | त त्र त | त त त | त – – |

| त्र त त | त त त | त त्र त | त्र ऽ त :‖

‖ त त्र त | त त्र त | त त त | त त्र त |

| त्र ऽ त | त त्र त | त्र ऽ ऽ | त – – :‖

आनक — **मारवा** — दादरा -१२०

| | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ‖ॐ‖ | त | तत | त | त | त | त | त्र | ऽ | ऽ | त | त | त | \| |
| \| | त | तत | त | त | त | त | त्र | ऽ | ऽ | त | त | त | \| |
| \| | त | तत | त | त | त | त | त्र | ऽ | ऽ | त | त | त | \| |
| \| | त | त | त | त | तत | त | त्र | ऽ | ऽ | त | – | – | :‖ |
| ‖ | त्र | तत | तत | तत्र | तत | त | त्र | तत | तत | तत्र | तत | तत | \| |
| \| | त्र | तत | तत | तत्र | तत | त | त्र | ऽ | ऽ | तत्र | तत | त | \| |
| \| | त्र | तत | तत | तत्र | तत | त | त्र | तत | तत | तत्र | तत | तत | \| |
| \| | त्र | तत | तत | तत्र | तत | त | त्र | ऽ | ऽ | तत्र | तत | त | :‖ |
| ‖ | त्र | ऽ | त | त | तत | त | त | त | त | त्र | ऽ | त | \| |
| \| | त्र | ऽ | त | त | त | त | त | तत | त | त | – | – | \| |
| \| | त्र | ऽ | त | त | तत | त | त | त | त | त्र | ऽ | त | \| |
| \| | त्र | ऽ | त | त | त | त | त | त–त | त | – | – | – | :‖ |
| ‖ | त | त्रत | – | त | त्रत | – | त्र | ऽ | त | त्र | ऽ | त | \| |
| \| | तत्र | तत | तततत | तत्र | तत | तततत | त | त्रत | – | त | त्रत | – | \| |
| \| | त | तत्र | – | तत्र | तत्र | तततत | तत्र | तत्र | तततत | त | त्रत | – | \| |
| \| | त | त्रत | – | त | त्रत | – | तत्र | तत | त––त | त | – | – | :‖ |

आनक — **तोड़ी** — दादरा -१२०

||ॐ|| त्र ऽ ऽ | – त त | त त्र त | तत तत त |

| तत्र त त | त तत त | त – – | त तत त |

| त्र ऽ ऽ | – त त | त त्र त | तत तत त |

| तत्र त त | त तत त | त्र ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ :||

|| त त त | – त त | त्र ऽ त | त – त |

| त त त | – त त | त्र ऽ त | त्र त – |

| – त त | – त त | त त्र त | त त्र त |

| त तत त | त त त | त तत त | त्र त – :||

|| त तत त | त – त | त्र ऽ ऽ | त – – |

| त तत त | त – त | त्र ऽ त | त्र त – |

| त त त | त तत त | त त त | त तत त |

| त त त | त तत त | त त त | त्र ऽ ऽ :||

आनक — **बागेश्री** — दादरा -१२०

॥ॐ॥ – त त | – त त | – त त | त तत त |

| – त त | – त त | त्र ऽ ऽ | त त्र त |

| – त त | – त त | – त त | त तत त |

| – त त | – त त | त्र ऽ ऽ | त – – :॥

॥ त्र ऽ ऽ | त त्र त | तत्र तत्र त | त्र ऽ ऽ |

| त त त | त त्र त | – त त | – त त |

| त्र ऽ ऽ | त त्र त | तत्र तत्र त | त्र ऽ ऽ |

| त त त | त त्र त | त्र ऽ ऽ | त – – :॥

| | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ‖ॐ‖ | त | त | त | \| | त्र | s | s | \| | त | त | त | \| | त्र | s | s | \| |
| \| | त | त | त | \| | त | त | त | \| | त्र | s | s | \| | त | – | – | ‖ |
| ‖ | – | त | त | \| | – | त | त | \| | – | त | त | \| | – | तत | त | \| |
| \| | – | त | त | \| | – | त | त | \| | – | त | त | \| | – | त्र | त | \| |
| \| | – | त | त | \| | – | त | त | \| | – | त | त | \| | – | तत | त | \| |
| \| | – | त | त | \| | – | त | त | \| | त्र | s | s | \| | त | – | – | :‖ |
| ‖ | त्र | s | s | \| | त | तत | त | \| | त | त | त | \| | त | तत | त | \| |
| \| | त्र | s | s | \| | त | तत | त | \| | त | त | त | \| | त | तत | त | \| |
| \| | त्र | s | s | \| | त | तत | त | \| | त | त | त | \| | त | तत | त | \| |
| \| | त्र | s | s | \| | त | तत | त | \| | त्र | s | s | \| | त | – | – | :‖ |
| ‖ | त | तत | तत | \| | त | त | त | \| | त | तत | तत | \| | त | त | त | \| |
| \| | त | तत | तत | \| | त | त | त | \| | त | तत | तत | \| | त्र | s | s | \| |
| \| | त | तत | तत | \| | त | त | त | \| | त | तत | तत | \| | त | त | त | \| |
| \| | त | तत | तत | \| | त | त | त | \| | त्र | s | s | \| | त | – | – | :‖ |

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ‖ॐ‖ | त्र | s | त | \| | त्र | s | s | \| | तत | तत | त्र | \| | त | त | त | \| |
| \| | त्र | s | त | \| | त | त | त | \| | त्र | s | त | \| | त्र | s | त | \| |
| \| | त्र | s | s | \| | s | s | त | \| | त्र | s | s | \| | तत | तत | त्र | \| |
| \| | s | s | त | \| | त | त | त | \| | त्र | s | s | \| | त | – | – | :‖ |
| ‖ | त्र | s | त | \| | त्र | s | s | \| | तत | तत | तत | \| | त्र | s | त | \| |
| \| | त | त | त | \| | त्र | s | त | \| | त | त | तत | \| | त | – | – | \| |
| \| | त्र | s | s | \| | त | त | त | \| | त्र | s | s | \| | त | त | त | \| |
| \| | त्र | s | s | \| | त | त | त | \| | त्र | s | s | \| | त | – | – | ‖ |
| ‖ | तत | तत | त्र | \| | त | त | त | \| | त्र | s | त | \| | त | त | त | \| |
| \| | त्र | s | त | \| | त | त | तत | \| | त्र | s | s | \| | त | – | – | \| |
| \| | – | त | त | \| | – | त | त | \| | त्र | s | त | \| | – | त्र | त | \| |
| \| | – | त्र | त | \| | त | त | त | \| | त्र | s | s | \| | त | – | – | :‖ |

# केशवश्री



| | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ‖ॐ‖ | त्र | s | त | \| | – | तत | त | \| | त्र | s | त | \| | – | त | त | \| |
| \| | त्र | s | त | \| | – | त | त | \| | त्र | s | त | \| | त्र | s | त | \| |
| \| | – | त | त | \| | त | त | त | \| | – | त | त | \| | त | त | त | \| |
| \| | त्र | s | त | \| | – | तत | त | \| | त्र | s | त | \| | – | त | त | \| |
| \| | त्र | s | त | \| | – | त | त | \| | त्र | s | त | \| | त्र | s | त | \| |
| \| | त्र | s | s | \| | त | त | त | \| | त्र | s | s | \| | त | त | त | \| |
| \| | त | s | s | \| | त | – | – | ‖ | – | तत | त | \| | त्र | s | त | \| |
| \| | – | त | त | \| | त्र | s | त | \| | – | त | त | \| | त | त्र | त | \| |
| \| | त | त्र | त | \| | त | त | त | \| | त | त | त | \| | – | त | त | \| |
| \| | त्र | s | s | \| | त | – | – | ‖ | – | तत | त | \| | त्र | s | त | \| |
| \| | – | त | त | \| | त | – | – | \| | त्र | s | त | \| | त्र | त | – | \| |
| \| | त्र | s | त | \| | त्र | त | – | \| | त्र | s | त | \| | त्र | त | – | \| |
| \| | त्र | s | s | \| | त | तत | त | \| | त्र | त | – | \| | त | त | त | \| |
| \| | त्र | त | – | \| | तत | तत | त्र | \| | त | – | – | \| | तत | तत | त्र | \| |
| \| | त | त | त | \| | – | त | त | \| | त्र | s | s | \| | त | – | – | ‖ |
| \| | – | तत | त | \| | त्र | s | त | \| | त्र | s | s | \| | त | – | – | \| |

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तत | तत्र | तत | त | – | – | तत | तत्र | तत | त | – | – |
| तत | तत्र | तत | त | त | त | तत | तत्र | तत | त | – | – |
| – | तत | त | त | – | – | – | तत | त | त्र | ऽ | त |
| – | त | त | त | – | – | – | त | त | त्र | ऽ | त |
| त | त | त | तत | तत्र | त | – | तत | त | त्र | ऽ | त |
| – | त | त | त | – | – | तत | तत्र | तत | त्र | ऽ | ऽ |
| तत | तत्र | तत | त्र | ऽ | ऽ | तत | त्र | तत | त्र | तत | त |
| – | तत | त | त्र | ऽ | त | – | त | त | त्र | ऽ | त |
| – | त | त | त्र | ऽ | त | त | त | त | – | त | त |
| त्र | ऽ | ऽ | त | – | – | – | तत | त | त्र | ऽ | त |
| – | त | त | त | – | – | त | त | त | तत | त | – |
| – | त | त | तत | त | – | त | त | त | त्र | ऽ | त |
| तत | तत्र | त | – | तत | तत | त | – | तत | त | – | तत |
| त | – | तत | त | – | तत | – | त्र | त | तत | – | – |
| त्र | त | त | त | त | त | तत | त | त | त्र | ऽ | त |
| – | त | त | त | – | – | – | त | त्र | त | – | – |

आनक

# कलावती

दादरा -१२०

||ॐ|| त्र ऽ त | – त त | – त त | त्र ऽ त |

| त तत तत | त्र ऽ त | – त त | – त त |

| त्र ऽ त | त्र ऽ त | – त त | – त त |

| त्र ऽ त | त्र ऽ त | त त्र त | त – – :||

|| त्र ऽ त | त त्र त | त – त | त्र त त |

| त त्र त | त – त | त्र ऽ त | त त्र त |

| त – त | त्र त त | त त्र त | त – त्र |

| त त त | त्र ऽ त | त तत तत | त – – :||

|| त्र ऽ त | त – त | त्र ऽ त | त – – |

| त तत त | त तत त | त्र ऽ त | त्र ऽ त |

| त – त | त्र ऽ त | त – – | त्र ऽ त |

| त्र ऽ त |¹ त तत तत | त्र ऽ त | त – – :||

|² त तत त | त तत त | त – – ||

**आनक** **आसावरी** **दादरा -१२०**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ‖ॐ‖ | त्र ऽ ऽ | त त त | त्र ऽ ऽ | त तत त | \| |
| \| | त्र ऽ ऽ | त त त | त्र ऽ ऽ | त तत त | \| |
| \| | त्र ऽ ऽ | त त त | त्र ऽ ऽ | त तत त | \| |
| \| | त्र ऽ ऽ | त त त | त्र ऽ ऽ | त – – | :‖ |
| ‖ | – त त | – तत त | – त त | – तत त | ‖ |
| ‖ | – त त | – त त | – तत त | त त त | \| |
| \| | – त त | – त त | – तत त | त्र ऽ ऽ | \| |
| \| | त त त | – त त | – तत त | त त त | \| |
| \| | – त त | – त त | त तत त्र | त – – | :‖ |
| ‖ | – त त | – त त | – त त्र | त त त | \| |
| \| | – त त | – त त | – त त्र | त त त | \| |
| \| | त त त | त – त्र | त त त | त – त्र | \| |
| \| | त त्र त | त त्र त | त्र ऽ ऽ | त – – | :‖ |

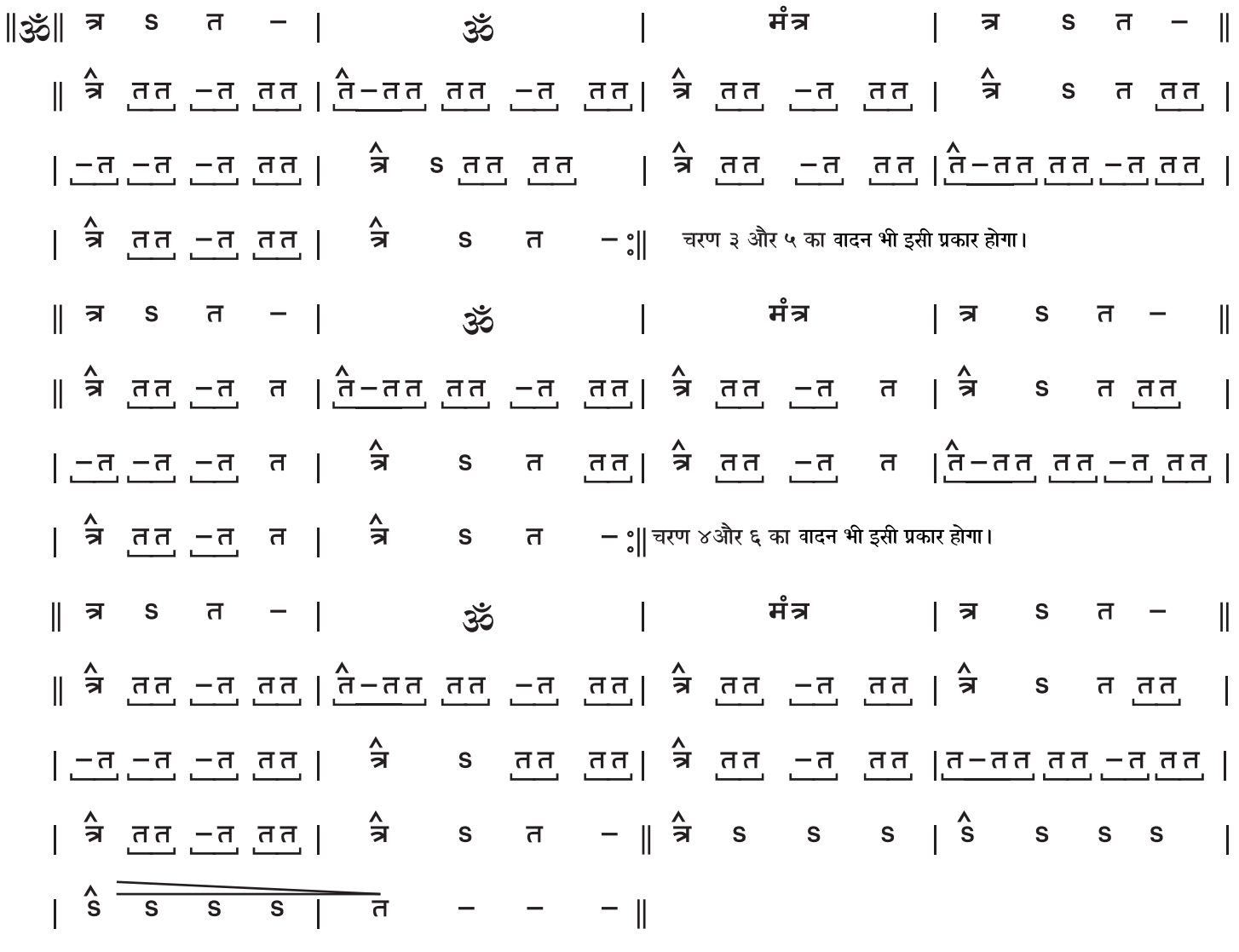

आनक

# आरुणी

त्रिताल -१२०

‖ॐ‖ त्र ऽ त – | ॐ | मंत्र | त्र ऽ त – ‖

‖ त्रॅ तत –त तत | तॅ–तत तत –त तत | त्रॅ तत –त तत | त्रॅ ऽ त तत |

| –त –त –त तत | त्रॅ ऽ तत तत | त्रॅ तत –त तत | तॅ–तत तत –त तत |

| त्रॅ तत –त तत | त्रॅ ऽ त –:‖ चरण ३ और ५ का वादन भी इसी प्रकार होगा।

‖ त्र ऽ त – | ॐ | मंत्र | त्र ऽ त – ‖

‖ त्रॅ तत –त त | तॅ–तत तत –त तत | त्रॅ तत –त त | त्रॅ ऽ त तत |

| –त –त –त त | त्रॅ ऽ त तत | त्रॅ तत –त त | तॅ–तत तत –त तत |

| त्रॅ तत –त त | त्रॅ ऽ त –:‖ चरण ४और ६ का वादन भी इसी प्रकार होगा।

‖ त्र ऽ त – | ॐ | मंत्र | त्र ऽ त – ‖

‖ त्रॅ तत –त तत | तॅ–तत तत –त तत | त्रॅ तत –त तत | त्रॅ ऽ त तत |

| –त –त –त तत | त्रॅ ऽ तत तत | त्रॅ तत –त तत | त–तत तत –त तत |

| त्रॅ तत –त तत | त्रॅ ऽ त – ‖ त्रॅ ऽ ऽ ऽ | ऽॅ ऽ ऽ ऽ |

| ऽॅ ऽ ऽ ऽ | त – – – ‖

आनक

# समर्पण

दादरा -१२०

‖ॐ‖ – त त | त त्र त | त्र ऽ ऽ | त – – |

| त त त | – त त | त्र ऽ ऽ | त – – |

| – त त | त त्र त | त्र ऽ ऽ | त – – |

| त त त | – त त | त्र ऽ ऽ | त – – :‖

‖ त त तत | त – त | त तत त्र | त – – |

| त त त | त्र ऽ त | त तत तत्र | त – – |

| त त त | त्र ऽ त | – त त | त्र ऽ ऽ |

| त त त | त्र ऽ त | त्र ऽ ऽ | त – – :‖

‖ – तत तत्र | त त त | – त त | त – – |

| – तत तत्र | त त त | – त त | त – – |

| – तत तत्र | त त त | त्र ऽ त | त्र ऽ ऽ |

| त त त | – त तत | त त तत | त – – :‖

| | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ‖ॐ‖ | – | त | त | \| | – | तत | त | \| | – | त | त | \| | त | – | – | ‖ |
| ‖ | – | त | त | \| | – | त | त | \| | – | त | तत | \| | त | त | त्र | \| |
| \| | – | त | त | \| | – | त | त | \| | – | त | तत | \| | त | त | त्र | \| |
| \| | – | त | त | \| | – | त | त | \| | त्र | s | s | \| | त | – | – | :‖ |
| ‖ | – | त | त | \| | – | त | त | \| | – | तत | तत | \| | – | त | त्र | \| |
| \| | – | त | त | \| | – | त | त | \| | – | तत | तत | \| | – | त | त्र | :‖ |
| ‖ | – | त | त | \| | – | त | त | \| | – | त | त | \| | – | त | तत | \| |
| \| | – | त | त | \| | – | त | त | \| | – | त | त | \| | – | त | त्र | \| |
| \| | – | त | त | \| | – | त | त | \| | त्र | s | s | \| | त | – | – | ‖ |
| ‖ | – | त | त | \| | – | त | त | \| | – | त | तत | \| | त | त | त्र | \| |
| \| | – | त | त | \| | – | त | त | \| | – | त | तत | \| | त | त | त्र | \| |
| \| | – | त | त | \| | – | त | त | \| | त्र | s | s | \| | त | – | – | ‖ |
| ‖ | त्र | s | s | \| | s | s | s | ‖ | | | | | | | | |

# नैमित्तिकानि

## आनक — ध्वजारोपणम् — दादरा-१२०

||ॐ|| त्र ऽ ऽ | त तत त | त्र ऽ ऽ | त तत त :||

|| त त्र त | त तत तत | त त त | त तत त :||

|| त त त | त तत त | त त त | त तत त |

| त्र ऽ त | त ततत त | त्र ऽ त | त ततत त |

| त्र ऽ त | त तत त || त्र ऽ ऽ | त तत त |

| त्र ऽ ऽ | त तत त :|| त्र ऽ ऽ | ऽ – – ||

## आनक — ध्वजप्रणाम — केरवा-१२०

||ॐ|| त–तत तत | त त्र | तत तत | त त्र |

| त–तत तत | त त्र | तत तत | त – ||

आनक **स्वागतप्रणाम** रूपक-१२०

‖ॐ‖ त ‖

‖ त्र s त , त तत , त तत |

| त्र s त , त तत , त तत |

| त्र s त , त तत , त तत |

| त्र s त , त तत , त तत |

| त्र s त , त त्र , त त्र ‖ त−− ‖

आनक **प्रत्युत्प्रचलनम्** केरवा-१२०

‖ॐ‖ तत तत्र | तत तत्र | तत्र तत | त्र तत्र |

| तत तत्र | तत तत्र | तत्र तत | त्र त ‖

आनक **आद्यसरसंघचालकप्रणाम** झपताल-२४०

‖ॐ‖ −−त ‖

‖ त्र ऽ , तततत | त्र ऽ , ऽ ऽ त | त्र ऽ , ततत | त्र ऽ , ऽ ऽ त |

| त्र ऽ , ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ , ऽ ऽ त | त्र ऽ , ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ , ऽ ऽ त |

| त्र ऽ , ततत | त्र ऽ , ऽ ऽ त | त्र ऽ , ततत | त्र ऽ , ऽ ऽ त |

| ततत , त्र ऽ त | ततत , त्र ऽ त | ततत , त्र ऽ त | त− , −−− ‖

आनक **सरसंघचालकप्रणाम** केरवा-१२०

‖ॐ‖ त त−−त | त − | त त−−त | त − |

| त त−−त | त त−−त | त त−−त | त − |

| त त−−त | त − | त त−−त | त − |

| थ त्र | थ त्र | त त−−त | त − ‖